



मिताब

तेरहवाँ संस्करण 2019



सत्यमेव जयते



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
छत्तीसगढ़ - रायपुर

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़ - रायपुर



कार्यालय में प्रशिक्षण के दौरान महालेखाकार एवं वरिष्ठ उप महालेखाकार के साथ प्रशिक्षु आई.ए.एस.



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

मिताब्

तेरहवाँ संस्करण 2019

हिन्दी वार्षिक पत्रिका

स्वत्वाधिकार एवं प्रकाशन
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), छत्तीसगढ़ - रायपुर
जीरो पाईट, बलौदाबाजार रोड
पिन - 492005

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है।



**कार्यालय में जिम का उद्घाटन करते हुए महालेखाकार
श्री दिनेश रायभानजी पाटील एवं श्री राजीव कुमार**



मितान परिवार

संरक्षक

श्री दिनेश रायमानजी पाटील

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) छत्तीसगढ़, रायपुर

अध्यक्ष

श्री राजीव कुमार

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) छत्तीसगढ़, रायपुर

परामर्शदात्री समिति

श्री अशोक कुमार जोशी

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
(लेखा एवं हकदारी)

मोह. फैज़ान नैय्यर

वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा)
(लेखा एवं हकदारी)

सुश्री इति शुक्ला

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
(लेखापरीक्षा)

सुश्री प्रियाती कौड़ो

उप महालेखाकार (प्रशासन)
(लेखापरीक्षा)

संपादन समिति

श्री संतोष श्यामराव सरोजकर

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्री सुशांत साहु

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री आशुतोष पाण्डेय

सहायक लेखा अधिकारी

सुश्री मीनाक्षी बाजपेयी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री यशवंत वर्मा

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

श्री उत्तम कुमार सिंह

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

15 अगस्त 2019 उत्सव



दिनेश आर. पाटील
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)



संदेश

राजभाषा हिन्दी को समर्पित हमारी पत्रिका 'मितान' का तेरहवां अंक प्रकाशित करना अत्यंत गौरव का विषय है। यह पत्रिका हिन्दी भाषा के महत्व को दर्शाती है तथा सिद्ध करती है, कि हिन्दी एक समृद्ध भाषा है और भारत की राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकता की कड़ी है। हिन्दी राजभाषा के साथ-साथ विज्ञान की भाषा भी बनती जा रही है क्योंकि, अब इस भाषा ने संचार एवं व्यापार के लिये भी अपने आप को तैयार कर लिया है।

'मितान' पत्रिका का अनवरत प्रकाशन इस बात को दर्शाता है कि इस कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी हिन्दी में कार्य करने में रुचि रखते हैं एवं हिन्दी को प्राथमिकता प्रदान करते हैं। यह कार्य किसी भी कार्यालय के लिए एक संयुक्त प्रयास होता है, जिसमें कार्यालय के समस्त अनुभागों का पूर्ण योगदान रहता है।

अतः इस अंक के प्रकाशन एवं श्रेष्ठ संपादन के लिए पत्रिका के संपादक एवं उससे जुड़े हुए समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनायें।

दिनेश आर. पाटील
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग अंतर-क्षेत्रीय हॉकी टूर्नामेंट

सरदार वल्लभ भाई पटेल अंतर्राष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम, रायपुर में आयोजित

दिनांक - 28 एवं 29 मार्च 2019



राजीव कुमार
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)



संदेश

इस कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'मितान' के 13 वें अंक के प्रकाशन पर उत्साहित हूँ तथा कार्यालय में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयासों से मैं अभिभूत हूँ।

पत्रिकाएं समाज की घटनाओं या परिवेश का सचित्र वर्णन करती हैं तथा कला एवं संस्कृति की संवाहक भी होती हैं। ज्ञान एवं अनुभव के संचरण में भी पत्रिका की भूमिका अहम होती है और इनमें प्रयोग की जाने वाली भाषा यदि सर्वसाधारण की भाषा हो तो पत्रिका चिरकाल तक सजीव बनी रहती है।

छत्तीसगढ़ में मितान शब्द का अभिप्राय है 'आत्मिक मित्र'। ऐसा मित्र, जो जिंदगी भर एक दूसरे का हर परिस्थिति में सहयोग करते हैं तथा एक दूसरे के गुण-अवगुण से प्रेरणा लेते हैं। इस पत्रिका का शीर्षक इन्हीं भावों से प्रेरित होकर रखा गया है, ताकि पाठकगण इस पत्रिका को अपना परम हितैषी समझकर इनमें निहित संदेशों को आत्मसात कर सकें।

अतः इन्हीं आशा एवं विश्वास के साथ पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं सहित संपादक मंडल को बधाई देता हूँ।

राजीव

राजीव कुमार
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)



**छत्तीसगढ़ क्रिकेट बोर्ड द्वारा आयोजित सीनियर 20-20 क्रिकेट लीग 2018
में कार्यालय के विजेता टीम के साथ महालेखाकार महोदय**

संपादक की कलम से...



भारत विविधताओं का देश है, यहाँ भाषा विविध परिवेश में परिलक्षित होती है। ऐसे में हिंदी एक संपर्क भाषा के रूप में विविधता में एकता को चरितार्थ करती है। विभिन्न राज्यों के बीच संचार सेतु बनकर एक क्षेत्र के निवासी का दूसरे क्षेत्र के निवासियों के साथ हिंदी भाषा संपर्क सूत्र का आधार है। राज काज की भाषा के रूप में भी हिंदी अपनी सार्थकता प्रदर्शित कर रही है। अपार संभावनाओं एवं शब्दों के भंडार से परिपूर्ण हिंदी आज भी उस सोपान तक नहीं पहुँच पाई, जो उसकी नियति है।

किसी भी स्वाधीन देश के लिए जो महत्व उसके राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का है, वही उसकी राजभाषा का है। प्रजातान्त्रिक देश में जनता और सरकार के बीच भाषा की दीवार नहीं होनी चाहिए। शासन का काम जनता की भाषा में किया जाना चाहिए। किसी देश की राष्ट्रभाषा उसके स्वतंत्र, सक्षम एवं समृद्ध होने की पहचान है।

राष्ट्रभाषा आपसी संपर्क बनाये रखते हुए देश की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'मितान' का तेरहवां अंक समर्पित करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। पत्रिका के संपादन हेतु योगदान देने वाले सभी रचनाकारों का हम संरक्षक, परामर्शदाता एवं संपादक मण्डल की ओर से धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका को पढ़ने के पश्चात अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत कराएँ ताकि प्रकाशन को और सुन्दर एवं बेहतर बनाया जा सके।

आपके सुझाव तथा प्रतिक्रिया की हम प्रतीक्षा करेंगे।

संतोष श्यामराव सरोजकर
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

॥ आपके पत्र ॥

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका 'मितान' के 12 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय हैं। श्री यशवंत वर्मा का लेख 'हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए आवश्यक सुझाव' सुश्री प्रमिला बाघ की रचना 'धरती का बैकुण्ठ है जगन्नाथ पुरी', सुश्री अपूर्वा श्री की कविता 'मुश्किल वक्त है.... गुजर जायेगा', श्री नमन जैन की कविता 'माँ', एवं श्री ज्ञानेन्द्र कुमार का लेख 'गरीबी का दुश्मन', आदि रचनाएँ विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों, एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
ओड़िशा, भुवनेश्वर-751001

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के पत्रां क्र. सं.-हिन्दी पत्रिका-मितान-12-2018-19 दिनांक 25.02.2019 द्वारा हिन्दी पत्रिका 'मितान' के 12 वें अंक की एक-एक प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ अति रोचक, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। श्री ओमप्रकाश सिंह का लेख 'इलाहाबाद का विद्यार्थी जीवन', श्री अरूण कुमार की कहानी 'लालच का फल', तथा श्री नमन जैन की कविता 'नारी' के साथ-साथ अन्य लेख एवं कवितायें भी बहुत अच्छी लगी। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उत्तम संपादन, संकलन हेतु संपादक मंडल व रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनायें।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना

आपके कार्यालय की पत्रिका 'मितान' का 12वां अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आंतरिक एवं बाह्य सौंदर्य तथा मुद्रण आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कहानियाँ, कविताएँ, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक एवं हृदयस्पर्शी हैं। विशेष रूप से श्री कुंदन कुमार का लेख 'संकल्प की ताकत' तथा श्री नमन जैन की कविता 'माँ' सराहनीय है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखंड
बिहार, पटना

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'मितान' के 12वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुख्यपृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व मनमोहक है। 'समय', 'पथिक', हिंदी भाषा, 'नारी', 'लालच का फल', आदि रचनाएँ रूचिकर एवं सराहनीय ही नहीं बल्कि संग्रहणीय भी हैं। अन्य सभी रचनाएँ भी पठनीय एवं विचारणीय हैं। आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) कर्नाटका

आपके कार्यालय की पत्रिका 'मितान' का 12वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ आभार। पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज-सज्जा अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक हैं। यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के विकास की दिशा में किया गया एक सफल प्रयास है। पत्रिका की प्रत्येक रचना रोचक, ज्ञानवर्धक एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है। वैसे तो सभी रचनाएँ प्रसंशनीय हैं पर विशेष रूप से लेखों में श्री राजेश कुमार सिंह का 'समय' जिसमें समय की महत्ता को अनमोल बताया गया है, श्री संतोष श्यामराव सरोजकर का 'काम' के दौरान हंसी मजाक से जाहिर होता है आपका 'आत्मविश्वास' एवं 'संसार' में सर्वशक्तिशाली है.... मनुष्य की 'संकल्प शक्ति' बेहद दिलचस्प एवं ज्ञानवर्धक है। जहाँ एक तरफ श्री कुन्दन कुमार का 'नेकी कर दरिया में डाल' हमें परोपकार की सीख देता है वहीं दूसरी तरफ श्री रणजीत कुमार श्रीवास्तव का स्वप्न हमें स्वप्न देखने के लिए प्रोत्साहित करता है।

कविताओं में प्रमिला बाघ की सावन का निखार, अपूर्वा श्री की मुश्किल वक्त है... गुजर जाएगा, निशा ध्रुव की हिन्दी भाषा, श्री योगेश पांडे की कहानी का अंत रोचक एवं अर्थपूर्ण है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पश्चिम बंगाल

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'मितान' के 12 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिन्दी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
हिमाचल प्रदेश, शिमला

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका 'मितान' के 12 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी लेख, कविताएं, प्रेरक प्रसंग आदि पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। सभी रचनाएं उत्तम स्तर की है, इसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र है। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत ही सुंदर है। पत्रिका में दी गई कार्यालयीन झलकियों से स्पष्ट होता है कि कार्यालय द्वारा समय-समय पर अनेक सांस्कृतिक, स्वास्थ्य संबंधी तथा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। पत्रिका के मुख पृष्ठ सुंदर है तथा अंतिम पृष्ठ पर दिया गया स्वामी विवेकानंद का ध्यान मुद्रा तथा आस-पास के पर्यावरण संबंधी चित्र बहुत ही सुंदर है। कार्यालयी गणतंत्र दिवस समारोह के चित्रों ने पत्रिका को और भी निखारा है।

पत्रिका के सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को भी बहुत-बहुत बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्र/हिन्दी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
जम्मू व कश्मीर, जम्मू-180001

पत्र क्रमांक/हिन्दी कक्ष/मितान पत्रिका/फा.11/जा-69, दिनांक : 22.11.2018 के तहत आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका पत्रिका 'मितान' के 12 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज-सज्जा सुंदर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में प्रकाशित कहानियां, लेख एवं कविताएं प्रशंसनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

पत्रिका के कुशल संपादन के लिए सोनार बांगला परिवार की ओर से संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई। पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास हेतु ढेर सारी शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा),
(पश्चिम), कोलकाता-700001

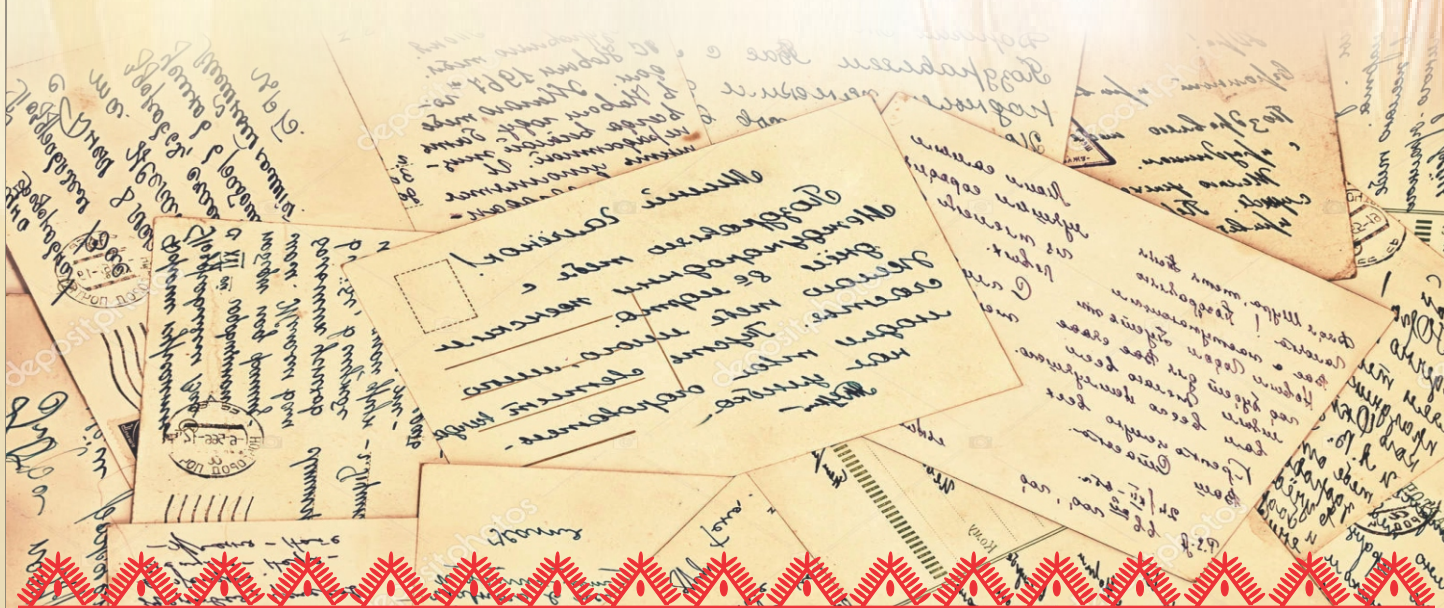
उपरोक्त विषय पर आपके पत्र क्रमांक/हिन्दी कक्ष/मितान पत्रिका/फा.11/जा-32, दिनांक: 22.11.2018 के साथ प्रेषित 'मितान' के बारहवें संस्करण की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका की उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा), असम, बेलतला, गुवाहाटी-29

कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'मितान' 2018 के बारहवां अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतर्त धन्यवाद। समाविष्ट सभी रचनाएं सुपाठ्य उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
आर्थिक एवं सेवा मंत्रालय, ए.जी.सी.आर भवन
आई.पी. एस्टेट, नई दिल्ली-110002



लेख

अनुक्रमणिका

क्रमांक	शीर्षक	रचनाकार	पृ.क्र.
1.	हिन्दी सप्ताह 2018	रिपोर्ट	1
2.	16 अगस्त	श्री योगेश कुमार	4
3.	छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया	सहायक लेखा अधिकारी श्री यशवंत वर्मा	5
4.	महालेखाकार साख सहकारी समिति	कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री विजय केसवानी	7
5.	सुविचार	लेखापरीक्षा अधिकारी श्री प्रेम प्रकाश यादव	8
6.	हथौड़ा और चाबी	डीईओ कु. निशा धुव	9
7.	कोई नाम रख नहीं पाया	एमटीएस मोहम्मद जफ़र	10
8.	संघर्ष	वरिष्ठ लेखापरीक्षक श्री कुंदन कुमार	12
9.	छत्तीसगढ़ की लोक चित्रकला	सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ) श्री राजेश कुमार वर्मा	13
10.	गर्व से कहो हम मोटे हैं	वरिष्ठ लेखापरीक्षक श्री योगेश कुमार	14
11.	अपनी तुलना दूसरों से ना करें	सहायक लेखा अधिकारी श्री सुधीर कुमार मांझी	16
12.	जीवन के विभिन्न पक्ष	लेखापरीक्षक मोहम्मद जफ़र	17
13.	शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009	वरिष्ठ लेखापरीक्षक श्री प्रेम प्रकाश यादव	18
14.	चिल्लाओ मत	डीईओ श्री अरूण कुमार	19
15.	वर्तमान में है आनंद	वरिष्ठ लेखापरीक्षक श्री यशवंत वर्मा	21
16.	रिश्ता	कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री कुंदन कुमार	22
17.	छत्तीसगढ़ के लोक नृत्य	सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ) श्री राजेश कुमार वर्मा	23
18.	प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत	वरिष्ठ लेखापरीक्षक श्री विजय केसवानी	25
19.	हमारी राजभाषा हिन्दी	लेखापरीक्षा अधिकारी श्री प्रेम प्रकाश यादव	27
20.	ज्ञान के बिना सच्चे की परख नामुमकिन	डीईओ श्री सुधीर कुमार मांझी	28
21.	छत्तीसगढ़ का लोक पर्व हरेली	लेखापरीक्षक श्री शिव कुमार धुव	29
		एमटीएस	

अनुक्रमणिका

क्रमांक	रचनाकार	शीर्षक	पृ.क्र.
22.	अनमोल वचन	श्री प्रेम प्रकाश यादव डीईओ	31
23.	आओ वृक्ष लगाएं	वृक्ष मित्र समिति	33
24.	संघर्ष की कहानी	श्री अनुपम कुमार सिंह सहायक लेखा अधिकारी	35

कविताएँ

क्रमांक	रचनाकार	शीर्षक	पृ.क्र.
25.	लिखना, देखना तुम	अपूर्वा श्री लेखापाल	37
26.	मेरा छोटा सा गांव	श्री अरूण कुमार वरिष्ठ लेखा परीक्षक	38
27.	पिता	श्री नमन जैन सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी	39
28.	मुखौटे पे मुखौटा, कहानी जिंदगी की	कुमारी निशा ध्रुव एमटीएस	40
29.	बचपन	सुश्री प्रमिला बाघ एमटीएस	41
30.	जीवन में अमल करें	मोहम्मद ज़फ़र वरिष्ठ लेखा परीक्षक	41
31.	कान्हा के बस में होता तो	श्री योगेश पाण्डेय वरिष्ठ लेखा परीक्षक	42
32.	घर से दूर नौकरी	श्री ओमप्रकाश सिंह डीईओ	43
33.	ये मस्त उम्र फिर नहीं आएगी, दोस्त अब थकने लगे हैं	श्री मनोज गजभिये वरिष्ठ लेखापाल	44
34.	मेरे संघर्षरत दोस्त, नौकरी	श्री नीतिश कुमार डीईओ	45
35.	साँसे	श्री नमन जैन सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी	46
36.	नींद और मैं	सुश्री प्रमिला बाघ एमटीएस	47
37.	क्यों?, पालना और अर्थी	अपूर्वा श्री लेखापाल	48
38.	बिखरी हुई नींद	श्री नमन जैन सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी	49
39.	अंतर्मन	सुश्री प्रमिला बाघ एमटीएस	50
40.	पदोन्नति/सेवानिवृत्ति		51-54

टिप :- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी हैं, रचना की मौलिकता तथा अन्य किसी विवाद के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेदार है।

हिंदी दिवस 2018

कार्यालय महालेखाकार छत्तीसगढ़, रायपुर में संयुक्त कार्यालयों (लेखापरीक्षा तथा लेखा एवं हकदारी) द्वारा दिनांक 14 सितंबर से 20 सितंबर 2018 तक हिन्दी सप्ताह का सफल आयोजन किया गया। इस दौरान विविध प्रतियोगिताएं आयोजित किया गया जिसमें कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी गण ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया।

14 सितंबर 2018 को डॉ. रंजना तिवारी, हिन्दी प्राध्यापिका की आतिथ्य एवं श्री राजीव कुमार, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की अध्यक्षता में हिन्दी सप्ताह का शुभारंभ किया गया। मंच के माध्यम से केन्द्रीय गृहमंत्री माननीय राजनाथ सिंह जी का संदेश पढ़ा गया तथा सप्ताहिक कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत किया गया।

संबोधन की कड़ी में सर्वप्रथम महालेखाकार महोदय द्वारा कार्यालय में हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग पर प्रसन्नता व्यक्त किया गया तथा हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने के लिए अधिकारी/कर्मचारियों को प्रेरित किया। संबोधन की अगली कड़ी में मुख्य अतिथि महोदया डॉ. रंजना तिवारी द्वारा हिन्दी की गौरवमयी इतिहास का वर्णन करते हुए एक सफल राष्ट्र के लिये राष्ट्रभाषा की भूमिका पर प्रकाश डाला गया।

14 सितंबर से 19 सितंबर, 2018 तक कार्यालय में हिन्दी से संबंधित विविध गतिविधियाँ संपन्न की गई जिसमें निबंध लेखन, श्रुत-लेख, हिन्दी सामान्य ज्ञान, कविता पाठ, टिप्पण आलेखन आदि हैं। इन संपूर्ण प्रतियोगिताओं में कार्यालय के समस्त अधिकारी/कर्मचारी गण ने उत्साह के साथ भाग लिया। 20 सितंबर, 2018 को हिन्दी सप्ताह का समापन समारोह आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. राजेश कुमार दुबे, प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय खरोरा, आमंत्रित थे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री बी. के. महांति, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) द्वारा किया गया। इस दौरान प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट स्थान रखने वाले अधिकारी/कर्मचारीगण को पुरस्कृत किया गया तथा कार्यालय की संयुक्त वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'मितान' के 12वें अंक का विमोचन किया गया।

अंत में मुख्य अतिथि, प्रधान महालेखाकार तथा महालेखाकार महोदय के अभिभाषणों के पश्चात सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया तथा हिन्दी सप्ताह 2018 के समापन की घोषणा किया गया।



हिन्दी सप्ताह 2018 की झलकियाँ



पुरस्कार वितरण



16 अगस्त



योगेश कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

अंकल ! तिरंगा सिर्फ पाँच रूपये में, भैया ! तिरंगा ले लो सिर्फ पाँच रूपये में। चैराहे पर जैसे ही लाल बत्ती जलती, गाड़ियाँ रूकती और छोटू अपना काम शुरू कर देता। 15 अगस्त का दिन था बारह साल का छोटू पूरे उत्साह के साथ तिरंगे बेच रहा था। सब उसे अब इसी नाम से बुलाते थे। दो साल पहले ही उसके माँ-बाप एक एक्सीडेंट में गुजर गये अब उसका कोई अपना ना था तब से वह कोई ना कोई छोटा-मोटा काम कर लेता, कभी फल-सब्जी की दुकान पर या कभी किसी किराने की दुकान पर।

लेकिन, आज छोटू बहुत खुश था। इसलिये नहीं कि वो आजादी का महत्व समझता था, खुश वो इसलिये था क्योंकि आज वो झण्डे बेचकर कुछ पैसे इकट्ठे करने वाला था। दुकान वाले ने उसे 200 झण्डे दिये थे यह कहकर कि पाँच रूपये से कम में मत देना, हर झण्डे पर तुम्हें एक रूपया मिलेगा। सुबह सात बजे ही वह चैराहे पर पहुँच गया। आज बहुत लोगों ने झण्डे खरीदे, शाम होते-होते उसने सारे झण्डे बेच दिये फिर सारे पैसे लेकर जेब में रखे और खुशी-खुशी वापस चल पड़ा, रास्ते भर वह सोचता रहा दुकानदार को पैसा देकर अपना हिस्सा लूँगा फिर बाजार जाऊँगा एक टी-शर्ट लूँगा, एक नेकर लूँगा और आज अपना मन पसन्द खाना खाऊँगा। एक भिखारी जिसने छोटू को झण्डे बेचते हुए देखा था उसका पीछा करने लगा, मौका देखकर उसने छोटू को गर्दन पकड़कर नीचे पटक दिया, उसकी जेब से सारे पैसे निकाले और भाग गया। छोटू रोता हुआ उसके पीछे भागा

लेकिन वो भिखारी पल भर में उसकी नजरों से ओझल हो गया। बहुत देर तक छोटू वहीं खड़ा रहा उसका दिल मानो बैठ सा गया था। अब वह दुकानदार के पैसे कहाँ से देगा, कौन उसकी बात का यकीन करेगा। रात हो चुकी थी और उसे भूख भी लगी थी काफी देर तक वह यूँ ही चलता रहा फिर थक कर सड़क के किनारे फुटपाथ पर भूखा ही सो गया।

सुबह जब उठा तो भूख फिर जोर पकड़ने लगी। तभी उसने देखा सड़क किनारे यहाँ-वहाँ कई सारे तिरंगे झण्डे पड़े हुए हैं। उसकी आँखों में चमक आ गयी उसे लगभग 20-25 झण्डे मिल गये थे जो धूल और कीचड़ से गंदे हो गये थे। उसने अपनी कमीज से सारे झण्डों को पोछकर साफ कर लिया और फिर उसी चैराहे पर पहुँच गया। लाल बत्ती जलती, गाड़ियाँ रूकती लेकिन आज किसी कार का शीशा तिरंगा देखकर खुल नहीं रहा था, छोटू ने बहुत कोशिश की लेकिन सब उसे अनदेखा कर रहे थे, उसे यकीन नहीं हो रहा था क्या ये वही लोग हैं जो कल पूरे जोश के साथ तिरंगा खरीद रहे थे। दोपहर हो चुकी थी और वह एक भी झण्डा नहीं बेच पाया था। शाम होते-होते उसका हौसला पस्त हो चुका था उसे अब तक समझ नहीं आया कि आज 15 से 16 अगस्त हो चुका था। देशभक्ति और स्वतंत्रता की बातें कुछ खास दिनों के लिये ही होती हैं, इतनी गहरी बात समझना छोटू की छोटी सी समझ से परे थी। दो दिन से भूखा छोटू चैराहे पर लगे डोमीनोज पिज्जा के पोस्टर को निहार रहा था उसके हाथ में लगा स्वतंत्र भारत का तिरंगा अब भी शान से लहरा रहा था।

छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया



यशवंत वर्मा

कनि. हिन्दी अनुवादक



छत्तीसगढ़ का उद्भव नवंबर 2000 में मध्यप्रदेश से पृथक राज्य के रूप में हुआ। यह बहुत ही कम समय में अत्यधिक विकसित राज्यों में से है। यहां की भौगोलिक एवं पर्यावरण की स्थिति को उद्योगों के विकास के लिए अनुकूल माना जाता है। सांस्कृतिक दृष्टि से भी यहां विविधता में एकता पायी जाती हैं। छत्तीसगढ़ी भाषा यहां की बहुतायात बोली जानी वाली भाषा हैं जो राजभाषा हिन्दी के सन्निकट है तथा राज्य की राज्यभाषा है। छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक एवं पारंपरिक विशेषताओं का वर्णन इनकी गुरतुर भाषा (मीठी बोली) में प्रस्तुत है।

भारत देश के हृदय में विराजे छत्तीसगढ़ राज्य ह महतारी (माता) के सामान जम्मो छत्तीसगढ़िया मन के भरन-पोषण करथे। डॉ. खूबचंद बघेल के सपनों के छत्तीसगढ़ राज्य ह प्राचीन कला, सभ्यता, संस्कृति, इतिहास

अउ पुरातत्व के मामला म अब्बड (बहुत) संपन्न हावय। पौराणिक काल में भी एकर महिमा के वर्णन पाये गये हे। माने जाथे भगवान श्री राम वनवास के समय राजीम अउ सिहावा पर्वत में विराजे रहिस। श्री राम के माई कौशिल्या के मइके भी छत्तीसगढ़ ल माने जाथे। एकर कारण राजीम के त्रिवेणी संगम ल छोटे कुंभ के दर्जा मिले हाबय।

ऐतिहासिक रूप में देखे जाय तो सिरपुर में खुदाई में मिले मूर्ती, भोरमदेव के कलात्मक मंदीर, तीरथगढ़ के प्राचीन गुफा, चित्रकुट के विशाल जलप्रपात, छत्तीसगढ़ ल देश-विदेश में विशेष पहचान दिलाय हे।

सांस्कृतिक परिदृश्य:-

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत के संचार में मौखिक परंपरा के ही योगदान हे। पंडवानी, भरथरी, चंदैनी, लोरिक-चंदा, देवार गीत, बांस गीत और आल्हा जैसन लोकगाथा के माध्यम से छत्तीसगढ़ के संस्कृति ह महानदी के धार बरोबर नित प्रवाहित होवत आय हे। तिहार-बार में गाए जाने वाले सुआ, करमा, ददरिया, पंथी, सोहर, फाग, बिहाव गीत, गौरा गीत, जसगीत, निर्गुणी भजन आदि लोकगीत के मधुर तान ह जन-जन के अंतश ल महुवा के रस में भिगो देथे। भजन गायिका पद्मभूषण पुरस्कृत श्रीमती तीजन बाई ह देश-विदेश में भजन प्रस्तुती कर छत्तीसगढ़ के माथा ल ऊंच करे हे।

1964 में छत्तीसगढ़ आकाशवाणी के स्थापना से सभ्यता अउ संस्कृति, मनोरंजन के चोला पहने सरल रूप में नित बिकास करे हाबय। बरसाती भईया के गुरतूर भाखा सुने

बिना आदमी मन के खाना नई पचत रहीस। छत्तीसगढ़ी गीत-संगीत, हर उमर अउ वर्ग के आदमी मन के बीच मे अपन परभाव बनाय हे। छत्तीसगढ़ी गायक के रुप में धुरवा राम मरकाम, पंचराम मिर्झा, कुलवन्तिन बाई, लक्ष्मण मस्तुरिया, कुलेश्वर ताम्रकार, ममता चन्द्राकर आदि के नाम ह लोक रंग के अंबर में सितारा के समान चमकत हे।

उत्तर प्रदेश में नौटंकी, महाराष्ट्र में तमाशा, बंगाल में यात्रा के जो स्थान हे वइसे छत्तीसगढ़ मे नाचा गम्मत के स्थान हे। ये नाचा गम्मत ह लोक-संस्कृति के वाहक में गाड़ी के दोनो चक्का के बरोबर भूमिका निभाय हे। नाचा गम्मत के बात हो दुलारसिंह मंदारजी अउ हबीब तनवीर के नाम नई आय तो नाचा गम्मत भी रिसा जाही। परसिध्द निर्देशक श्याम बेनेगल ने छत्तीसगढ़ी नाचा से प्रेरित होकर 'चरणदास चोर' फिल्म के निर्देशन करे हे। आधुनिक समय मे ये परंपरा के रक्षा अउ प्रसार करे बर खुमान साव भी अपन बहुमुल्य योगदान दे हाबय।

खान-पान, रहन-सहन:-

छत्तीसगढ़ ह कृषि प्रधान राज्य हरे इहां के एक तिहाई लोगन मन ह केवल कृषि पर निर्भर हावय। सबले ज्यादा धान के पैदावर अउ सबले ज्यादा धान के किस्म पाये जाने के कारण छत्तीसगढ़ ल "धान के कटोरा" के उपाधि मिले हे। खेती के परमुख साधन में बैला-भैंसा ल देवता के बरोबर पूजे जाथे। यहां के परमुख फसल धान हरे जो राज्य के लिए भी परमुख आवक के श्रोत हे। छत्तीसगढ़ के दुबराज चाउर तो विश्व परसिध्द हे जेकर खुशबू से पूरा पारा-मोहल्ला महके लगथे। लेकिन अब किसान मन ह मँहगाई के मार से अउ जादा फसल उपजाय के चक्कर में अपन ये विरासत ल खोवत जाथे। किसम-किसम के दवाई-खाद डाले के कारण अब दुबराज चाउर ह ऐसे नदा गये हे जइसे डोकरा के सिर मे करिया बाल।

त्योहार और व्यंजन

छत्तीसगढ़ के परमुख त्योहार में हरेली, तीजा-पोरा, छेरछेरा,

मातर, दशहरा, दिवाली, होली आदि हैं। महिला मन के हरियर लुगरा (हरी साड़ी) अउ पुरुष मन के सफेद धोती-कुर्ता ह ये राज्य के पारंपरिक पोशाक आय। खान-पान मे इहां के मनखे मन ह बटकी भर बासी अउ चुटकी भर नून ल अपन पारंपरिक पौष्टिक आहार मानथे। सुबह के नास्ता मे मिर्चा के चटनी के साथ गोरसी रोटी, चीला रोटी ल भी बड़े चाव के साथ खाये जाथे। अइरसा, सोंहारी, ठेठरी, खुरमी, चिला आदि व्यंजन त्योहार में बड़े उत्साह से बनाये जाथे अउ वइसने चाव के साथ खाये जाथे। त्योहार में एक खास परंपरा हे इहां एक दुसर के घर जाके खाना खाना, ये छत्तीसगढ़ संस्कृति के दुर्लभ रिवाज हे।

आधुनिकता के परभाव छत्तीसगढ़ के प्राचीन संस्कृति अउ सभ्यता पर साफ दिखत हे। जहां एक ओर किसम किसम के मशीन आय से किसान मन के रोजी रोटी अउ गाय बैला नदावत हे त दुसर ओर व्यसतता के कारण लोगन मन ह तिहार के मजा ल भुलावत हे। जो भी हो विकास सर्वोपरि हे पर विकास के आड़ मे अपन धर्म, संस्कृति, सभ्यता अउ मातृभाषा की उपेक्षा करना अनुचित होथे। सबो धर्म अउ सभ्यता के एक ही उद्देश्य होथे 'प्रेम अउ सहयोग' जेकर पूर्ती मे छत्तीसगढ़ वासी तन-मन-धन से प्रयास करत हाबय।



महालेखाकार साख सहकारी समिति

‘मैं अकेला ही चला था जानिब-ए-मंजिल मगर लोग साथ आते गए और कारवाँ बनता गया।’ -मजरुह सुल्तानपुरी



विजय केसवानी
लेखा परीक्षा अधिकारी



छत्तीसगढ़ के पृथक लेखा एवं लेखा परीक्षा कार्यालय रायपुर में स्थापित होने के बाद, एजी स्टाफ परिवार के एक सदस्य श्री एन कुंडल राव इस बात के लिए काफी सचेत थे कि आकस्मिक चिकित्सा स्थितियों और अन्य आकस्मिक मुद्दों के दौरान वित्तीय संघर्ष हेतु सहयोगी और दोस्त कभी साहूकारों की ओर रुख करते थे। इससे उन्हें एक समिति बनाने का विचार आया ताकि ऋण सुविधा को संस्थागत रूप से दिया जा सके और किसी भी व्यक्तिगत आभार के बिना, आवश्यकता के समय में कर्मचारियों को समय पर उचित सहायता दी जा सके। इसका एक सकारात्मक प्रभाव, अपनेपन की भावना के साथ बचत का अनुशासन भी था। श्री एन कुंडल राव ने अपने तीन मित्रों श्री राजेश सिंह, श्री साबिर अली और श्री संदीप मुखर्जी के साथ इस पर चर्चा की, जो इस विचार के साथ आगे बढ़ने और समिति के संस्थापक सदस्य बनने के लिए उत्साहित थे। अगला कार्य, कार्यकारिणी बनाना, कानूनी औपचारिकताएं और सदस्यों को शामिल करना था।

इसके परिणत फरवरी 2014 में 11 पदाधिकारियों और 21 सदस्यों के साथ समिति का पंजीकरण महालेखाकार कार्यालय सहकारी साख समिति मर्यादित, छत्तीसगढ़, रायपुर नाम से हुआ जिसमें 250 सदस्यों की क्षमता थी। सृजन की प्रारंभिक लागत संस्थापक सदस्यों द्वारा व्यक्तिगत रूप से वहन की गई। अप्रैल 2004 तक, 196 सदस्यों एवं 100 रु. प्रति माह के मासिक योगदान के साथ समिति की प्रारंभिक

कोष रु. 4.50 लाख था। समिति ने अपने सदस्यों को रु. 2000 के साधारण ऋण का प्रावधान किया।

15 वर्षों में समिति ने सभी मानकों में अत्यधिक वृद्धि देखी और एक लघु प्रारम्भ के साथ सफल एवं लाभदायक उद्यम साबित हुआ। वर्ष 2019 तक समिति की सदस्यता क्षमता बढ़कर 500 हो गई कोष राशि रु. 2.00 करोड़ से अधिक हो गई तथा साधारण ऋण सीमा 7 प्रतिशत साधारण ब्याज के साथ अधिकतम 1.50 लाख थी। समिति ने 5 प्रतिशत साधारण ब्याज पर आपातकालीन ऋण के रूप में बिना दस्तावेज के ऋण, अस्पताल में भर्ती पर तथा निर्दिष्ट रोगों के लिए ऋण सीमा क्रमशः रु. 30,000, रु. 50,000 तथा रु. 1.00 लाख की। समिति मृतक सदस्य के आश्रितों को रु. 20,000 की अनुग्रह राशि भी प्रदान करती है। समिति वार्षिक आम सभा आयोजित करती है एवं सभी सदस्यों को वार्षिक लाभांश मिठाई, कैलेंडर, डायरी आदि का वितरण भी करती है। समिति के अस्तित्व के 10 वर्ष पूरे होने पर, सोसायटी के समारोह में महालेखाकारों (लेखा एवं लेखा परीक्षा) ने समिति की गतिविधियों एवं उपलब्धियों की प्रशंसा की।

समय के साथ तालमेल बनाए रखने हेतु समिति ने 2017 से लेखांकन उद्देश्यों के लिए सॉफ्टवेयर का उपयोग शुरू किया और 2018 से एसएमएस पर योगदान का विवरण एवं वेतन से योगदान कटौती शुरू की गई। समिति की वास्तविक उपलब्धियाँ इसके सदस्यों को आकस्मिक चिकित्सा स्थितियों एवं अन्य आपदाओं से बचाव में की गयी सहायता है। समिति के 11 पदाधिकारियों की टीम का अपने उद्देश्य के प्रति समर्पण एवं निरंतर प्रयासों से यह संभव हो सका है। मुझे कई अवसरों पर समिति के गर्वित सदस्य के रूप में लाभ मिला।

सुविचार



प्रेम प्रकाश यादव
डाटा एंट्री ऑपरेटर

- प्रेम का अर्थ है संतुलन अर्थात् स्वयं, परमात्मा व अपने संगी-साथियों के साथ पारस्परिक सामंजस्य। यह शारीरिक आकर्षणों से परे चेतना की एक उत्कृष्ट अवस्था है।
- यदि कोई आपसे क्रोध से बात करता है तो क्रोध की आग पर प्रेम का शीतल जल डाल दीजिए।
- ईर्ष्या या घृणा के विचार मन में प्रवेश होते ही खुशी गायब हो जाती है। प्रेम व शुभ-भावना युक्त विचारों से उदासी दूर हो जाती है।
- आदर प्राप्त करने का एकमात्र उपाय यह है कि पहले आप दूसरों का आदर करें।
- अपने शत्रुओं से छुटकारा पाने का सबसे अच्छा उपाय यह है कि उन्हें अपना मित्र बना लीजिए।
- यदि किसी भूल के कारण कल का दिन दुःख में बीता तो उसे याद कर आज का दिन व्यर्थ ना गवाएँ।
- एक धनी व्यक्ति का धन चोरी या नष्ट हो सकता है परंतु बुद्धिमान व्यक्ति की खुशी व विवेक सुरक्षित रहते हैं।
- आयु बढ़ने के साथ या दुर्घटना से शारीरिक सुंदरता नष्ट हो सकती है परंतु आत्मिक सुंदरता कभी नष्ट नहीं होती है।
- यदि आपका मन अतीत के बंधनों तथा बीती बातों में उलझा हुआ है तो आप वर्तमान का आनंद अनुभव नहीं कर सकेंगे।
- आयु के अनुसार बूढ़ा होना चिंता की बात नहीं किंतु व्यर्थ चिंता से आप जल्दी बूढ़े हो जाएंगे।
- यदि एक अवसर आपके हाथ निकल गया है तो भी अपनी दृष्टि के आगे आंसू रूपी बादल ना आने दे अपनी दृष्टि साफ रखें ताकि अगला अवसर भी ना निकल जाए।
- चिंता ग्रस्त व्यक्ति मृत्यु से पहले कई बार मरता है।
- सफलता मन की शीतलता से उत्पन्न होती है। ठंडा लोहा ही गर्म लोहे को काट व मोड़ सकता है।
- घोर संकट के समय भी मुस्कराते रहना संतुलित मन की निशानी है।
- कभी भी आशा ना छोड़ें। आशा एक ऐसा पथ है जो जीवन भर आप को गतिशील बनाए रखता है।
- कोई भी कार्य करने से पूर्व एक छण रुकें। उसके परिणाम के बारे में सोचें, फिर प्रारंभ करें।
- अपनी जरूरत के लिए धन कमाना अच्छी बात है किंतु धन दौलत जमा करने की भूख होना बुरी बात है।
- अगर आप सदा स्वयं की दूसरों के साथ तुलना करते रहते हैं तो आप अवश्य ही या तो अहंकार के अथवा ईर्ष्या के शिकार हो जाएंगे।
- जिन चार बातों ने हमारे जीवन को बर्बाद किया है, वे हैं मैं- 'मैं' व 'मेरा', 'तू' व 'तेरा' अतः इन्हें भूल जाइये।
- समय ही जीवन है। समय को बर्बाद करना अपने जीवन को बर्बाद करने के समान है।
- किसी दूसरे व्यक्ति की आलोचना करने से पहले हमें अपने अंदर झांक कर देख लेना चाहिए।
- दर्पण में आप अपना चेहरा देख सकते हैं, चरित्र नहीं।
- हमारे विचारों का स्तर ही हमारी निजी प्रसन्नता का स्तर निर्धारित करता है।
- लाठी व पत्थर से हड्डियां टूटती हैं परंतु शब्दों से प्रायः संबंध टूट जाते हैं।
- एक अच्छा स्वच्छ मन वाला व्यक्ति दूसरों की विशेषताएं देखता है। दूषित मन वाला व्यक्ति दूसरों में बुराई ही ढूंढता है।
- जहां प्रेम नहीं, वहां शांति नहीं हो सकती। जहां पवित्रता नहीं वहाँ प्रेम नहीं हो सकता।



हथौड़ा और चाबी



निशा ध्रुव
एम.टी.एस.

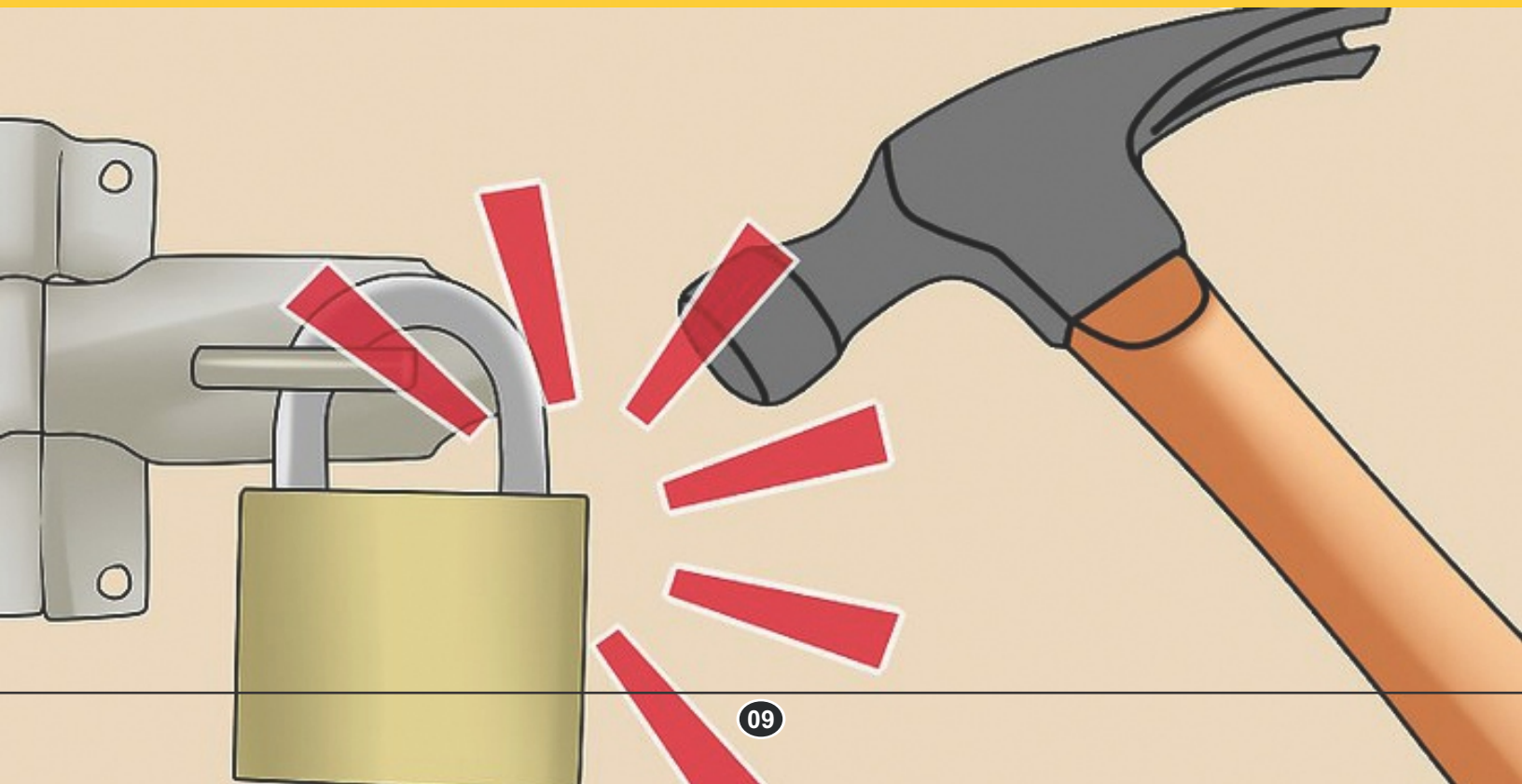
शहर की तंग गलियों की बीच एक पुराने ताले की दुकान थी। लोग वहाँ से ताला-चाबी खरीदते और कभी-कभी खो जाने पर डुप्लीकेट चाबी बनवाने भी आते। ताले वाले की दुकान में एक भारी भरकम हथौड़ा था जो कभी-कभार ताले तोड़ने के काम आता था। हथौड़ा अक्सर सोचा करता कि आखिर इन छोटी-छोटी चाबियों में कौन सी खूबी है जो इतने मजबूत तालों को भी चुटकियों में खोल देती है? जबकि मुझे इसके लिए कितने प्रहार करने पड़ते हैं। एक दिन उससे रहा नहीं गया और दुकान बंद होने के बाद उसने एक नन्ही चाबी से पूछा:- “बहन ये बतायो कि आखिर तुम्हारे अन्दर ऐसी कौन सी शक्ति है, जो तुम इतने जिद्दी तालों को भी बड़ी आसान से खोल देती हो, जबकि मैं इतना बलशाली होते

हुए भी ऐसा नहीं कर पाता ?

चाबी मुस्कराई और बोली:-

‘दरअसल, तुम तालों को खोलने के लिए बल का प्रयोग करते हो उनके ऊपर प्रहार करते हो और ऐसा करने से ताला खुलता नहीं, टूट जाता है। जबकि मैं ताले को बिल्कुल भी चोट नहीं पहुँचाती, बल्कि मैं तो उसके मन में उतर कर उसके हृदय को स्पर्श करती हूँ और उसके दिल में अपनी जगह बनाती हूँ। इसके बाद जैसे ही मैं उससे खुलने का निवेदन करती हूँ, वह फौरन खुल जाता है।’

“हर एक चीज जो बल से प्राप्त की जा सकती है उसे प्रेम से भी पाया जा सकता है, लेकिन हर एक जिसे प्रेम से पाया जा सकता है उसे बल से नहीं प्राप्त किया जा सकता”



कोई नाम रख नहीं पाया



मोहम्मद जाफर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

नहीं सी आखें और मुड़ी हुई उंगलियां थी, ये बात तब की है जब दुनिया मेरे लिये सोई हुई थी। नंगे से शरीर पे नया कपड़ा पहना था, ईद-वीद की समझ ना थी फिर भी मेरे साथ मनाता था। घर में खाने के वांदे थे, पर एफ.डी. में पैसे जोड़ रहा था और उसके खुद के सपने अधुरे थे पर मेरे लिये बुन रहा था, ये बात तब कि है जब दुनिया मेरे लिये सोई हुई थी।

वक्त कटा, साल बढ़ा, पर तब भी सब अंजान था, मैं फिर भी उसकी जान था, बिस्तर का गीला करना हो या फिर रातों का रोना, एक बाप ही था जिससे छिना मैंने उसका सोना था, सुबहा फजर तक गोदों में खिलाता, झुलों में हिलाता, फिर दिन में कमाता शाम में चला आता। कभी खुद से परेशान, कभी दुनिया का सताया था, एक बाप ही था जिसने मुझे रोते हुए हँसाया था

अल्फाजों से तो गूंगा था मैं, पर वो मेरे इशारे समझ रहा था, मैं खुद इस बात से हैरान हूँ आज, कि कल वो मुझे किस तरह से पढ़ा रहा था। अब्बा तो छोड़ो यार अभी अअअ... भी निकला ना था, पर वो मेरी हर फर्माईश को पूरा कर रहा था और मैं भी उसके लाड-प्यार में ढलने लगा था। घर से निकल ना जाए अब उसके कदमों पे नज़र रखने लगा था और मुद्दे तो हज़ार थे बज़ार मे उसके पास, पर कब ढल जाए सूरज उसको इसका इंतज़ार था और मैं भी दरवाजे की चौखट को ताकता रहता था, जब भी होती थी दस्तक तो वाकर से झांकता रहता था, देख के उसकी शक्ल मैं दूर से चिल्लाता था, जो भी इशारे मुझे आते थे, उससे उसे अपनी तरफ बुलाता था। वो भी छोड़-छाड़ के सब कुछ मुझे सीने से लगाता था, कभी हवा मे उछालता-कभी कर्तब दिखाता था।

मेरी एक मुस्कान के लिये कभी हाथी कभी घोड़ा बन जाता था और सो सकूँ रात भर सुकून के साथ, इसलिये पूरी रात एक करवट में गुज़ारता था।

पर वो बचपन शायद अब सो चुका था और मैं जवानी की दहलीज पे कदम रखने लगा था। उसकी कुर्बानी को उसका फर्ज समझने लगा था। चाहे वो फिर बिना पंखे के सोना हो या मुझे हवा में सुलाना या फिर ईद का वो पुराने कपड़े पहनना और मुझे नए पहनाना, या तपते हुए बुखार में वो मथे पर रखी ठंडी पट्टियों को बदलना, या मेरी हर ज़िद के आगे झुक जाना।

वो बचपन था जो गुज़र गया, वो रिश्ता था जो सिकुड़ गया और मैं उस कुर्बानी के बोझ को उठा नहीं पाया, इसलिये वो शहर मैं कहीं दूर छोड़ आया। नया शहर था, नई शहर की हवा मुझपे चढ़ने लगी थी। अपने बाप की हर नसीहतें मुझे एक बचपना लगने लगी थी। काम जो मिल गया था, पैसे जो आने लगे थे, क्या जरूरत है बाप को, ये सोच मुझमें पलने लगी थी और उधर मेरा बाप बेचैन था मेरी याद में कि कुछ रोज तो घर आ जा बेटा, बस यहीं थी उनकी फरियाद में और मैं उनसे हिसाब लेने लगा था जो दुनिया का कर्जदार बन चुका था, क्या जरूरत है अब्बु तुम्हे इतने पैसों की ? अभी ये सवाल करने लगा था।

अब घड़ी का कांटा फिर पलट चुका था, कल तक मैं किसी का बेटा था, आज किसी का बाप बन चुका था और हसरतों का स्वेटर मैं भी बुनने लगा था। कल क्या करेगा मेरा बेटा मैं भी यही सोचने लगा था। अब दुनिया में ना उससे कोई आगे था ना कोई अपना था, सब पराए थे, बस वही एक सपना था तब मुझमें एक जज्बात उमड़ने लगा था, जिस जज्बात से मैं

हमेशा अंजान था कि कल क्या गुजरी होगी मेरे बाप पे, अब मुझे ये समझ आने लगा था। बेलौस (बिना शर्त के) मोहब्बत कि मूर्त होता है बाप, जो लफ्जों में ना बोला जाये और कलमों से ना लिखा जाये वो होता है बाप, जो रोते हुऐ को हँसा दें और खुद को कमजोर (विकलांग) बना के तुम्हे खड़ा कर दें वो बैसाखी होता है बाप।

एक संदेश पूरे आवाम के नाम...

एक रोज तुम्हे अहसास जरूर होगा, कि मशरुफ तुम थे, उम्र दराज वो होगा, जिसकी उंगली का सहारा पकड़ कर चला

करता था। आज वही घड़ी का तलबगार होगा जिसके सड़के में जी रहे हो आज। कल वो ना रहे तो क्या होगा ?

तब तक जब तक बाप का साया हमारे साथ होगा और जन्नत के तलबगार हो तो सीने से लगा लेना, क्योंकि वही कल जन्नत का सरदार होगा, सब गिले शिकवे मिटा के चिपक जाना उसको, क्योंकि आज तो बाप है पर कल वो तुम्हारे साथ ना होगा....

‘मैं इस नज़्म का कोई नाम रख नहीं पाया, क्योंकि मैं बाप को एक लफ्ज में बयां नहीं कर पाया’



संघर्ष



कुन्दन कुमार
सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)

जीवन संघर्ष का ही दुसरा नाम है। बिना संघर्ष के मिलने वाली सुख सुविधा, मान-सम्मान, सफलता उतना आनंदित नहीं करती, जितना कि संघर्ष उपरांत प्राप्त की गई सफलता से मिलती है। संघर्ष ही सफलता की कुंजी है। कुछ लोग जन्म से ही कुशाग्र एवं प्रतिभाशाली होते हैं, परंतु जीवन की पथरीली राहों पर संघर्ष की क्षमता न होने के कारण जीवन में अपेक्षित लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाते, जबकि कुछ लोग कम प्रतिभावान होते हुए भी जीवन पथ पर संघर्ष करते हुए अपार सफलता प्राप्त करते हैं। संघर्ष करने की आवाज अन्तर्मन से उठनी चाहिए क्योंकि अन्तर्मन की आवाज संघर्ष की शक्ति को गई गुना बढ़ा देती है, जबकि अधूरे मन से किया गया संघर्ष अपेक्षित सफलता को प्राप्त करने में बाधक होता है। संघर्ष करने की शक्ति हमें आत्मविश्वास, सत्कर्म, मानवता की सेवा, जुनून, उसूलों के प्रति निष्ठा भाव इत्यादि से प्राप्त होती है।

दुनिया में जितने भी महापुरुष हुए और उन्होंने सफलता की पराकाष्ठा को छुआ उनमें संघर्ष करने के लिए ये तमाम गुण मौजूद थे। वास्तव में जब व्यक्ति अपने संघर्षों से दोस्ती कर लेता है, प्रसन्नता के साथ उन्हें अपनाता है, उत्साह के साथ चलता है तो संघर्ष का सफर उसका साथ देता है और उसे कठिन से कठिन डगर को पार करने में मदद करता है, लेकिन यदि व्यक्ति जबरन इसे अपनाता है, बेरुखी के साथ इस मार्ग पर आगे बढ़ता है तो वह ज्यादा दूर तक नहीं चल पाता, थोड़ा रास्ता तय करके वह हार मान लेता है। जीवन हर एक के लिए गुलाबों से सजा बिस्तर नहीं है और हमें परिस्थितियों से संघर्ष करके ही जीना है। दुनिया में जितने भी

महापुरुष हुए उन्होंने जीवन में सफल होने के लिए संघर्ष की पराकाष्ठा को छुआ। यदि आप सकारात्मक रूप से संघर्ष कर रहे हैं तो समझ लीजिए आपकी सफलता दूर नहीं है। वह लोग जो संकट में उन कार्यों को छोड़ देते हैं, वह भी कुछ समय बाद यह महसूस करते हैं कि उस कार्य में डटे रहते तो हमारा जीवन कुछ अलग होता। संघर्ष एक ऐसी शक्ति है जो काबिलियत को सफलता में परिवर्तित कर देती है। एक प्रसिद्ध सुक्ति है कि मैदान में हारा हुआ इन्सान फिर से जीत सकता है, लेकिन मन से हारा हुआ इन्सान कभी नहीं जीत सकता। संघर्ष ही इन्सान को मजबूत बनाता है फिर चाहे वो कितना भी कमजोर क्यों न हो। हमें जीवन के दायित्व को समझते हुये मानवीय मूल्यों के साथ जीवन पथ पर संघर्ष करते हुए लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए।

8. नोहडोरा :- मिट्टी का नया घर बनाते समय महिलाएँ अलंकरण के लिए मिट्टी से सूखे हुए अथवा गहरे अलंकरण द्वारा आकर्षक कृतियाँ बनाती हैं जिसे नोहडोरा कहते हैं। इसमें पशु-पक्षी, फूल-पत्तियाँ, पेड़-पौधे आदि का चित्रण किया जाता है।



छत्तीसगढ़ की लोक चित्रकला





गर्व से कहो हम मोटे हैं



योगेश कुमार

सहायक लेखा अधिकारी

एक जमाना था जब मोटे लोगों को आकर्षक माना जाता था। किसी मोटे-ताजे इंसान को देखकर लोग उसकी तारीफ करते थे और पूछते थे कौन-सी चक्की का आटा खाते हो जी! लेकिन आज सब उल्टा हो गया। फिट होने के फैशन ने हमारे मोटापे को बदनाम करके रखा है। लेकिन मेरे सभी मोटे और तंदरूस्त साथियों मैं आपको बताना चाहता हूँ कि आप बिल्कुल हताश ना हों, मोटापा कोई श्राप नहीं, ये तो ईश्वर का वरदान है, इसके बड़े-बड़े फायदे हैं जैसे, आप खाते-पीते घर के लगते हो। भारी-भरकम होने की वजह से सामने वाला आपको हल्के में नहीं लेता, कोई आपसे बेवजह पंगा नहीं लेता, आपकी श्रीमती जी आपके साथ सुरक्षित महसूस करती हैं क्योंकि आप पति के साथ-साथ बॉडीगार्ड की तरह लगते हो और यदि श्रीमती भी मोटी हों तो एक चिन्ता से आप मुक्त हो जाते हो कि अब उनसे कोई चक्कर नहीं चला सकता।

ये पतले और फिट लोग बहुत ईर्ष्यालु होते हैं। हम जैसे मोटे-ताजे लोगों को देखकर मन-ही-मन कुढ़ते रहते हैं और अपनी भड़ास निकालने के लिए भोले-भाले मोटे लोगों को फालतू फंड का ज्ञान देते रहते हैं। ये ईर्ष्यालु लोग आपको कहीं भी मिल सकते हैं आपके घर में, ऑफिस में या फिर बाजार में, ये चलते-फिरते कहीं भी आपको टोक सकते हैं,

“तुम्हारा वजन बढ़ रहा है, ये सही नहीं है, डाइटिंग करो, तला-भुना मत खाओ, सुबह जल्दी उठना शुरू करो” इत्यादि-इत्यादि। ये हमें ऐसा महसूस कराते हैं जैसे धरती की आधी समस्याओं के लिये हमीं जिम्मेदार है। अरे इन्हें क्या पता कि हमारे माँ-बाप ने इतना लाड़-प्यार करके हमें गोलू-मोलू बनाया है। पिज्जा, बर्गर, समोसा, आलू के परांठे, घी से चुपड़ी रोटी, रबड़ी और गुलाब जामुन की कीमत ये फिट लोग क्या जाने भला! ये तो चाहते हैं कि हम भी इनकी तरह मन-मारकर कुछ भी ना खायें और स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ न उठा पायें। अरे, इनको कौन बताये कि इतने सालों से इतना खाकर 14-14 घन्टे सोकर हमने ये गोल-मटोल तोंद कमाई है। ये लोग नहीं जानते कि ये तोंद कितनी उपयोगी होती है, मसलन यदि आप कुर्सी पर बैठे हों और आपके पास टेबल ना हो तो आप ट्रे को अपनी तोंद पर रख सकते हैं और बड़े आराम से चाय की चुस्की का आनन्द ले सकते हैं और फर्ज कीजिये यदि आप किसी बहुमंजिला इमारत की आठवीं मंजिल से गिर जायें तो गुरुत्वाकर्षण बल के कारण ज्यादा संभावना है कि आप तोंद के बल ही गिरेंगे और यदि ऐसा हुआ तो जमीन पर टप्पा खाकर पाँचवीं मंजिल पर सही सलामत लैंडिंग कर जायेंगे और खुदा-ना खास्ता अगर कोई पतलू वहाँ से गिर जाये तो बचने का कोई मौका नहीं क्योंकि उसके पास

बुनियादी टूल नहीं है, वो है गोल-मटोल तोंद।

चलिये अब बात करते हैं कि मोटापे ने दुनिया को कितनी महान हस्तियाँ दी हैं। बप्पी लहरी और अदनान सामी ने अपने समय में संगीत को नई ऊचाईयाँ प्रदान की हैं और अदनान सामी जैसे ही मोटापे की पटरी से उतरे वैसे ही उनका करियर भी पटरी से उतर गया। क्रिकेट की बात करें तो याद कीजिये सनथ जयसूर्या और इंजमाम उल-हक को जिन्होंने अपनी बल्लेबाजी से कई फिट गेंदबाजों को छकाया।

कॉमेडी के जगत में कोई ऐसी पतली महिला नहीं है जो भारती का मुकाबला कर सके। इसी फिटनेस के चक्कर में उद्योगपति अनिल अंबानी कर्ज में आ गये वो तो गनीमत थी उनके बड़े भाई ने उन्हें बचा लिया और ये संदेश दिया कि तरक्की का राज मोटापे में है। राजनीति की बात करें तो आपको एक राज की बात बताता हूँ। सन् 2014 में भाजपा की सरकार पूर्ण बहुमत में आयी थी वो चाहते तो धारा 370 तभी हटा सकते थे लेकिन अपने पहले कार्यकाल में वो ऐसा नहीं कर

सके, क्योंकि उस समय गृहमंत्री थे राजनाथ सिंह जो कि एकदम फिटमैन हैं इसलिए उनसे ना हो पाया। अपने दूसरे कार्यकाल में सरकार ने त्रुटि सुधार करते हुए अपने मोटा भाई अमित शाह को गृहमंत्री बनाया उन्होंने अपनी तंदरूस्ती के एक ही वार से धारा 370 को धराशायी कर दिया।

कुल मिलाकर बातों का सार ये है कि आप लोग मोटापे को लेकर बिलकुल शर्मिन्दा ना हों। ये पतले और फिट लोग आपको कितना ही हतोत्साहित करने का प्रयत्न करें और आप इनकी एक भी मत सुनना, ये तो ईर्ष्यालु हैं इन्हें ईर्ष्या की अग्नि में जलने दीजिये। आप तो बस अपने मोटापे को सहेज कर रखिये। लोग गर्व से सीना फुलाते हैं, आप गर्व से अपनी तोंद फुलाइये। याद रखिये आप धरती पर बोझ नहीं हैं। आप तो वो खम्भे हैं जिन पर धरती का संतुलन टिका हुआ है। अन्त में यही कहना चाहूँगा कि लम्बे हों या छोटे हों, दुआ करो सब मोटे हों।



अपनी तुलना दूसरों से न करें

(मां के द्वारा बचपन में सुनाई गयी एक कहानी जो मुझे आज भी प्रेरित करती हैं)



सुधीर कुमार माझी
लेखापरीक्षक



एक बार की बात है, किसी जंगल में एक कौआ रहता था, वो बहुत ही खुश था, क्योंकि उसकी ज्यादा इच्छाएं नहीं थी। वह अपनी जिंदगी से संतुष्ट था, लेकिन एक बार उसने जंगल में किसी हंस को देख लिया और उसे देखते ही सोचने लगा कि ये प्राणी कितना सुन्दर है, ऐसा प्राणी तो मैंने पहले कभी नहीं देखा ! इतना साफ और सफेद ।

यह तो इस जंगल में औरों से बहुत सफेद और सुंदर है, इसलिए यह तो बहुत खुश रहता होगा । कौआ हंस के पास गया और पूछा, भाई तुम इतने सुंदर हो, इसलिए तुम बहुत खुश होगे? इस पर हंस ने जवाब दिया, हां मैं पहले बहुत खुश रहता था, जब तक मैंने तोते को नहीं देखा था ।

उसे देखने के बाद से लगता है कि तोता धरती का सबसे सुंदर प्राणी है । हम दोनों के शरीर का तो एक ही रंग है लेकिन तोते के शरीर पर दो-दो रंग हैं, उसके गले में लाल रंग का घेरा और वो सूरख हरे रंग का था, सच में वो बेहद खूबसूरत था । अब कौए ने सोचा कि हंस तो तोते को सबसे सुंदर बता रहा है, तो फिर उसे देखना होगा ।

कौआ तोते के पास गया और पूछा, भाई तुम दो-दो रंग पाकर बड़े खुश होगे? इस पर तोते ने कहा, हां मैं तब तक खुश था जब तक मैंने मोर को नहीं देखा था । मेरे पास तो दो ही रंग हैं लेकिन मोर के शरीर पर तो कई तरह के रंग हैं । अब कौए ने सोचा सबसे ज्यादा खुश कौन है, यह तो मैं पता करके ही रहूंगा । इसलिए अब मोर से मिलना ही पड़ेगा । कौए ने मोर

को जंगल में ढूंढा लेकिन उसे पूरे जंगल में एक भी मोर नहीं मिला और मोर को ढूंढते-ढूंढते वह चिड़ियाघर में पहुंच गया, तो देखा मोर को देखने बहुत से लोग आए हुए हैं और उसके आसपास अच्छी खासी भीड़ है । सब लोगों के जाने के बाद कौए ने मोर से पूछा, भाई तुम दुनिया के सबसे सुंदर जीव हो और रंगबिरंगे हो, तुम्हारे साथ लोग फोटो खिंचवा रहे थे । तुम्हें तो बहुत अच्छ लगता होगा और तुम तो दुनिया के सबसे खुश जीव होगे? इस पर मोर ने दुखी होते हुए कहा, भाई अगर सुंदर हूं तो भी क्या फर्क पड़ता है !

मुझे लोग इस चिड़ियाघर में कैद करके रखते हैं, लेकिन तुम्हें तो कोई चिड़ियाघर में कैद करके नहीं रखता और तुम जहां चाहो अपनी मर्जी से घूम-फिर सकते हो । इसलिए दुनिया के सबसे संतुष्ट और खुश जीव तो तुम्हें होना चाहिए, क्योंकि तुम आजाद रहते हो । कौआ हैरान रह गया, क्योंकि उसके जीवन की अहमियत कोई दूसरा बता गया ।

दोस्तों, ऐसा ही हम लोग भी करते हैं । हम अपनी खुशियों और गुणों की तुलना दूसरों से करते हैं, ऐसे लोगों से जिनका रहन-सहन का माहौल हमसे बिल्कुल अलग होता है । हमारी जिंदगी में बहुत सारी ऐसी चीजें होती हैं, जो केवल हमारे पास हैं, लेकिन हम उसकी अहमियत समझकर खुश नहीं होते । लेकिन दूसरों की छोटी खुशी भी हमें बड़ी लगती है, जबकि हम अपनी बड़ी खुशियों को दरकिनार कर देते हैं ।



मोहम्मद जफ़र
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जीवन के विभिन्न पक्ष

प्राचीन ग्रंथ कहते हैं कि हम सब इस विशाल जीवन सागर में सीपियों की तरह तैर रहे हैं। यद्यपि सब समान चेतना से जन्मे हैं, लेकिन कोई भी दो जीवन एक जैसे नहीं हैं। हम सबके जीवन कितने भी अलग हों, सब एक दूसरे पर आश्रित हैं और सबसे कुछ न कुछ सीखा जा सकता है। जीवन के सभी पक्षों को समझने के लिये, ज्यादा नहीं, बस पांच दिन निकालें। एक पूरा दिन, सुबह से शाम तक, किसी किसान के साथ बितायें। उसके साथ सुबह जल्दी खेत में जायें और देखें कि वह सारा दिन क्या करता है? आप वातावरण और भोजन के प्रति संवेदनशील हो जायेंगे। विश्व में भोजन का एक तिहाई हिस्सा बर्बाद किया जाता है और फेंक दिया जाता है। किसान के साथ पूरा दिन व्यतीत करने से आपको पता चलेगा कि भोजन उत्पन्न करने के लिये कितनी अधिक मेहनत और कितने संसाधनों का प्रयोग होता है। तब आप भोजन फेंकने से पहले दो बार अवश्य सोचेंगे।

एक दिन जेल में बितायें (परंतु बिना कोई अपराध किये)। आपको अनुभव होगा कि जिन लोगों के ऊपर अपराधी का तमगा लगा कर जेल में डाल दिया गया है, वे परिस्थिति-वश या अज्ञानता-वश वहाँ पहुँचे हैं। जब क्रोध व्यक्ति को जकड़ लेता है, तो उसका अपने-आप पर कोई नियंत्रण नहीं रहता। यदि आप सबसे खतरनाक अपराधी से मिलोगे तो वह भी यही कहेगा 'मैंने ऐसा नहीं किया मुझे कुछ हो गया था और मुझसे यह हो गया।' यह स्पष्ट हो जायेगा कि प्रत्येक अपराधी के भीतर एक पीड़ित होता है, जो सहायता की पुकार कर रहा है। आपके हृदय में करुणा जाग जायेगी। यदि आपके दिल में किसी के लिये घृणा है तो वह भी समाप्त हो जाएगी।

तीसरे दिन एक विद्यालय के अध्यापक बन जायें। तब आपको पता चलेगा कि गुरु की आवश्यकता क्यों है? जीवन में आप जहाँ कहीं भी होते हो, वहाँ बहुत से लोगों की आप सहायता कर सकते हैं और मार्गदर्शन कर सकते हैं। यह भीतर गहराई से संतोष प्रदान करता है। ऐसा नहीं है कि जिनके

लंबे बाल और दाढ़ी हो, वही गुरु हो सकते हैं। हर कोई कम से कम कुछ लोगों के लिये तो गुरु हो ही सकता है। आपको अध्यापक बनने के लिये किसी विशेष कौशल की आवश्यकता नहीं है। इसके लिये बस करुणा की आवश्यकता है। अध्यापक होने के नाते आप लोगों में करुणा का संचार कर सकते हैं। 'मुझे कुछ नहीं चाहिये, बस मेरे छात्र उन्नति करें,' ऐसा निःस्वार्थ प्रेम आपके जीवन में आ जायेगा।

चौथा दिन किसी मानसिक चिकित्सा संस्थान में बितायें। पागलखाने में आपको कोई भी कुछ कहे, आपको कोई भी नाम लेकर बुलाये, आप इसका बुरा नहीं मानोगे। एक दिन जब आप ऐसी जगह पर व्यतीत करोगे जहाँ आपको कोई भी कुछ भी कहे, तब आपके अंदर यह हिम्मत आ जायेगी कि आप बिना उत्तेजित हुये किसी भी प्रकार की आलोचना सह लेंगे। न केवल बिना उत्तेजित हुये किसी भी प्रकार की आलोचना सह लेंगे, बल्कि जो लोग आपकी आलोचना कर रहे हैं उनके प्रति आपके मन में सहानुभूति भर जायेगी। हम छोटी-छोटी बातों पर उत्तेजित हो जाते हैं। वह मेरे बारे में क्या सोचेगा? हम यह सब सोचकर हिल जाते हैं और एक दम अपनी प्रतिक्रिया दे बैठते हैं। आपके अंदर आलोचना करने और आलोचना सहने, दोनों की शक्ति होनी चाहिये। यदि हम अपने बच्चों को यह सिखायेंगे, तब वह समाज के मजबूत व स्थिर सदस्य बन पायेंगे।

पाँचवा दिन किसी कब्रिस्तान या श्मशान में बितायें। आपको इस जीवन के अस्तित्व का बहुत निकट से और बहुत गहरा अनुभव होगा। आपकी जो भी शिकायतें हैं, सब समाप्त हो जायेंगी। यह अनुभव कि मृत्यु किसी भी समय आ सकती है, आपके जीवन का परिपेक्ष्य हमेशा के लिये बदल देगा। केवल औपचारिक शिक्षा ही काफी नहीं है। पूर्ण शिक्षा के लिये जीवन के विभिन्न पक्षों को जानना आवश्यक है। जब हम जीवन के विभिन्न पक्षों को गौर से देखते हैं तो यह हमें केंद्रित और स्वयं में स्थिर बना देता है।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009



प्रेम प्रकाश यादव
डाटा एंट्री ऑपरेटर

01 अप्रैल 2010 को संपूर्ण भारत में शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू कर दिया गया। इसे बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 नाम दिया गया है। इसका प्रमुख उद्देश्य है- 6 वर्ष से 14 आयु तक के सभी बच्चों को मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध करना। वर्ष 2002 में संविधान के सहर्ष संशोधन द्वारा अनुच्छेद-21 ए के भाग-3 द्वारा 6-14 वर्ष आयु तक के सभी बच्चों को मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का प्रावधान किया गया था। इस अधिनियम को सर्व शिक्षा अभियान तथा वर्ष 2005 के विधेयक का ही संशोधित रूप कहा जाए तो यथार्थ ही होगा। यह अधिनियम जम्मू और कश्मीर को छोड़कर पूरे राष्ट्र में लागू है।

वर्तमान में भारतीय शिक्षा दर अनुमानतः 74 प्रतिशत है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 ने 2010 के बाद शिक्षा के प्रसार में क्रांति ला दी। गाँव, झुग्गी-झोपड़ी के बहुत सारे बच्चे पढ़ने लगे। धीरे-धीरे देश में पढ़ें लिखे युवा वर्ग की संख्या बढ़ी है। देश का विकास तीव्र गति से हो रहा है।

मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का आश्वासन राज्य के नीति निदेशक तत्व में वर्णित है। इस अधिनियम के अंतर्गत निजी स्कूलों को 6-14 वर्ष तक के 25 प्रतिशत गरीब बच्चों को मुफ्त पढ़ाने होंगे। इन बच्चों से फीस वसूलने पर दस गुना

जुर्माना होगा। शर्त नहीं मानने पर मान्यता रद्द हो सकती है। मान्यता निरस्त होने पर स्कूल चलाया तो एक लाख और इसके बाद रोजाना 10 हजार रुपये का जुर्माना लगाया जायेगा। इस अधिनियम के तहत विकलांग बच्चों के लिए मुफ्त शिक्षा के लिए उम्र बढ़ाकर 18 साल रखी गई है। बच्चों को मुफ्त शिक्षा मुहैया कराना राज्य और केन्द्र सरकार की जिम्मेदारी होगी।

कमियाँ व आलोचना:-

- मुफ्त और अनिवार्य से जरूरी है समान शिक्षा- अच्छा होता कि सरकार मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का बिल लाने पर जोर देने के बजाय कॉमन स्कूल का बिल लाने पर ध्यान केन्द्रित करती। सरकार यह क्यों नहीं घोषणा करती कि देश का हर बच्चा एक ही तरह के स्कूल में जाएगा और पूरे देश में एक ही पाठ्यक्रम पढ़ाया जाएगा।

- मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा के तहत सिर्फ 25 फीसदी सीटों पर ही समाज के कमजोर वर्ग के छात्रों को दाखिला मिलेगा। मतलब शिक्षा के जरीये समाज में गैर बराबरी पाटने का जो महान सपना देखा गया वह अब भी पूरा नहीं होगा।

- मुफ्त शिक्षा की बात महज धोखा है, क्योंकि इसके लिए बजट प्रावधान का जिक्र विधेयक में नहीं है।



चिल्लाओ मत



अरुण कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मोहन बहुत ही शांत किस्म का व्यक्ति था तथा वह शहर के महाविद्यालय में हिन्दी विषय के प्रोफेसर पद पर कार्यरत था। उसकी शादी एक मैनेजर लड़की से हो गयी। शादी के उपरांत उन दोनों में बड़ा प्यार था, लेकिन कुछ समय पश्चात दोनों में छोटी-मोटी लड़ाई हो जाया करती थी, जिसमें एक दूसरे की अच्छाई-बुराई बताने पर बहस हो जाया करती थी लेकिन उसके पश्चात दोनों फिर प्यार से रहने लगते थे। धीरे-धीरे समय गुजरता गया और दोनों के मध्य टकराव भी बढ़ने लगा, चूँकि मोहन शांत स्वभाव का व्यक्ति था तो अपनी पत्नी की बातों पर ध्यान नहीं देता था एवं हँसकर टाल देता था और उसकी पत्नी मोहन पर चिल्लाती रहती थी। उसकी पत्नी की मोहन पर चिल्लाने की आदत बन गयी थी।

रोज की भांति आज फिर किसी बात को लेकर दोनों में बहस हो गयी और उसकी पत्नी मोहन पर चिल्लाने लगी लेकिन कुछ देर तक शांत रहने के उपरांत आज पहली बार मोहन को गुस्सा आ गया और अपनी पत्नी पर गुस्सा करते हुए बोला 'चिल्लाओ मत'! बस फिर क्या था? यह सुनकर उसकी पत्नी ने रोना शुरू कर दिया और क्रोधित होकर अपने माता पिता के घर चली गयी। मोहन अपनी पत्नी को वापस लाने उसके घर गया लेकिन उसकी पत्नी का गुस्सा अब भी शांत नहीं हुआ एवं उसने आने से मना कर दिया।

मोहन चिंतित हो गया कि चिल्लाना किसी भी व्यक्ति पर कितना भारी होता है? उसने अपनी पत्नी के माँ-बाप से सारी बात बताई, लड़की के माँ-बाप ने अपनी बेटी को समझाया कि बेटी गुस्से में बोल दिया... लेकिन फिर भी

उसका गुस्सा शांत नहीं हुआ। अंत में उनकी माँ अपनी बेटी के साथ इसका हल निकालने एक सन्यासी के पास गई और पूछा- 'क्रोध में लोग एक-दूसरे पर चिल्लाते क्यों हैं, जबकि दूसरा व्यक्ति हमारे सामने खड़ा है तो चिल्लाने की क्या जरूरत है जब धीरे से बोलने पर भी सामने वाला व्यक्ति सुन सकता है?'

सन्यासी ने हँसते हुए उत्तर दिया 'जब दो लोग आपस में नाराज होते हैं तो वे एक-दूसरे से बहुत दूर हो जाते हैं और इस अवस्था में वे एक-दूसरे को बिना चिल्लाये नहीं सुन सकते। वे जितना अधिक क्रोधित होंगे उनके बीच दूरी उतनी ही अधिक हो जाएगी और उन्हें उतनी ही तेजी से चिल्लाना पड़ेगा।'

'जब दो लोग प्रेम में होते हैं तब वे चिल्लाते नहीं बल्कि धीरे-धीरे बात करते हैं, क्योंकि उनके दिल करीब होते हैं, उनके बीच की दूरी नाम-मात्र की रह जाती है।'

'जब वे एक दूसरे को हृदय से भी अधिक चाहने लगते हैं तब वे बोलते भी नहीं, वे सिर्फ एक दूसरे की तरफ देखते हैं और सामने वाले की बात समझ जाते हैं।'

अतः जब तुम किसी से बात करो तो ये ध्यान रखो कि तुम्हारे हृदय आपस में दूर न होने पाएँ, तुम ऐसे शब्द मत बोलो जिससे तुम्हारे बीच की दूरी बढ़े, नहीं तो एक समय ऐसा आएगा कि ये दूरी इतनी अधिक बढ़ जाएगी कि तुम्हें लौटने का रास्ता भी नहीं मिलेगा। उसकी पत्नी को सब समझ आ गया था और वह गुस्सा खत्म कर पुनः प्यार से रहने लगी। 'इसलिए चर्चा करो, बात करो लेकिन चिल्लाओ मत'



वर्तमान में हैं आनंद..



यशवंत कुमार वर्मा
कनि. हिन्दी अनुवादक

समीर कभी भी वर्तमान में नहीं रहता था। उसने जीवन की प्रक्रिया का आनंद लेना नहीं सीखा था। जब वह स्कूल में होता तो वह बाहर खेलने के स्वप्न देखता था। जब वह बाहर खेल रहा होता था तब गर्मी की छुट्टियां के स्वप्न देखता था। समीर निरंतर दिवास्वप्न में खोया रहता था। उसके पास उन विशेष क्षणों का आनंद लेने के लिए समय नहीं था जो उसके जीवन में थे। एक सुबह समीर अपने घर के निकट एक जंगल में घूम रहा था। थकान महसूस करने पर उसने घासयुक्त एक स्थान पर आराम करने का निश्चय किया और अन्ततः उसे नींद आ गई। उसे गहरी नींद में सोये हुए कुछ ही मिनट हुए थे कि उसने किसी को अपना नाम पुकारते हुए सुना। समीर! समीर!। ऊपर से तेज कर्कश आवाज आई। जैसे ही उसने धीरे-धीरे अपनी आंखें खोली वह एक आश्चर्यजनक स्त्री को सामने खड़ा हुआ देखकर चकित हो गया। वह सौ वर्ष से अधिक उम्र की रही होगी और उसके बर्फ जैसे सफेद बाल कंधों से निचे तक ऊन के बुने हुए कंबल की तरह लटक रहे थे। उस महिला के झुर्रियों से भरे हुए हाथ में एक जादुई गेंद थी जिसके बीचो बीच एक छेद था और उस छेद में से बाहर की ओर एक लंबा सुनहरा धागा लटक रहा था।

समीर', उसने कहा, यह तुम्हारे जीवन का धागा है। यदि तुम इस धागे को जितना आगे-पीछे खींचोगे उतना ही तुम वर्तमान से भविष्य और भूत में जा सकते हो। समीर के उत्साह को देखते हुए बूढ़ी महिला ने धागे वाली गेंद उसको दे दी। अगले दिन, समीर अपनी कक्षा में बैठा हुआ बेचैनी और बोरियत अनुभव कर रहा था। अचानक उसे अपने नए

खिलौने की याद आ गई। जैसे ही उसने सुनहरी धागा को थोड़ा सा खींचा उसने तुरंत ही अपने-आपको अपने घर में, अपने बगीचे में खेलता हुआ पाया। जादुई धागे की शक्ति पहचानकर समीर शीघ्र ही स्कूल जाने वाली लड़का की भूमिका से उकता गया और अब उसकी किशोर बनने की इच्छा हुई उस पूर्ण जोश के साथ जो जीवन के उस दौर में होता है। अतः उसने फिर गेंद बाहर निकाली और सुनहरा धागा कसकर खींच दिया।

अचानक वह युवा बन गया जिसके साथ बहुत सुंदर सी पत्नी थी जिसका नाम चित्रा था। चित्रा से भी आए दिन तू-तू मैं-मैं से समीर संतुष्ट नहीं था। अब वह प्रौढ़ बनने के सपने देखने लगा। इसलिए उसने फिर धागा खींच दिया और थोड़ी देर में वर्षों का समय बीत गया। अब उसने पाया कि वह एक मध्यम आयु के प्रौढ़ व्यक्ति के रूप में सारे बच्चों से घिरा हुआ था। समीर ने कुछ और भी ध्यान से देखा। उसके बाल जो कभी एक दम काले थे भूरे होने लगे थे और उसकी माँ जो कभी युवा थी, जिसको वह बहुत अधिक प्यार करता था, वृद्ध और कमजोर हो गई थी। लेकिन अब भी समीर उन क्षणों को नहीं जी सका। समीर अब अपनी माँ की बीमारी से परेशान रहने लगा। उसने कभी भी वर्तमान में जीना नहीं सीखा था। इसलिए उसने एक बार फिर जादुई धागा खींच दिया और परिवर्तन देखने की प्रतीक्षा करने लगा।

अब समीर ने पाया कि वह नब्बे वर्षीय बूढ़ा व्यक्ति बन चुका था। उसके घने काले बाल सन की तरह सफेद हो गए थे और उसकी सुंदर पत्नी कुछ वर्ष पहले मर चुकी थी। उसके बच्चे बड़े हो चुके थे और अपना जीवन अपने तरीके से

जीने के लिए घर छोड़ चुके थे। अपने संपूर्ण जीवने में पहली बार समीर की समझ में यह बात आई कि उसने कभी भी जीवन की प्रशंसनीय बातों को समय पर अंगीकार नहीं किया। वह बच्चों के साथ कभी भी मछली पकड़ने नहीं गया था और ना ही कभी अपनी पत्नी के साथ चाँदनी रात में घूमने गया था। उसने बगीचा नहीं लगाया था और न ही उन उत्कृष्ट पुस्तकों को पढ़ता था जिसको उसकी माँ पढ़ना पसंद करती थी। इसके बजाय उसने पूरी जिंदगी जल्दबाजी की थी, रूककर कभी भी मार्ग में मिली अच्छाइयों को नहीं देखा था।

समीर यह जानकर बहुत दुखी हुआ उसने जंगल में जाने का निश्चय किया जहां वह लड़कपन में मस्तिष्क को तरोताजा करने और अपनी आत्मा को उत्साहपूर्ण बनाने के लिए घूमने जाया करता था। जब वह जंगल में घुसा तो उसने पाया कि उसके द्वारा लगाये गये पौधे विशाल पेड़ बन गये थे। जंगल अपने आप प्रकृति का स्वर्ग बन गया था। वह हरी घास में गहरी नींद में सो गया। कुछ मिनट बाद उसने किसी को अपना नाम पुकारते हुए सुना। समीर! समीर। उसने आश्चर्य से देखा तो सामने पाया कि वही बूढ़ी औरत थी जिन्होंने उसे गेंद दी थी। मेरे उपहार का आनंद तुमने किस प्रकार लिया, बूढ़ी औरत ने पूछा।

समीर ने स्पष्ट उत्तर दिया – पहले तो यह मुझे मनोरंजक लगा था अब मैं घृणा करता हूं। मेरा संपूर्ण जीवन मेरी आंखों के सामने से निकल गया इसका सुख भोगने का

अवसर दिए बिना। निश्चित रूप में दुखपूर्ण और सुखपूर्ण समय रहें होंगे लेकिन मुझे किसी का भी अनुभव प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला। मैंने जीवन जीने के अवसर को खो दिया है। तुम बहुत कृतघ्न हो, बूढ़ी औरत ने कहा, फिर भी मैं तुम्हारी एक अंतिम इच्छा पूरी करूंगी।

समीर ने एक क्षण के लिए सोचा और फिर उत्तर दिया, 'मैं फिर से अपने वर्तमान में जाना चाहता हूं और अपना जीवन भरपूर जीना चाहता हूं। वह फिर गहरी नींद में सो गया। फिर उसने किसी को अपना नाम पुकारते हुए सुना और अपनी आँखें खोल दिया। आँखें खोलते ही सामने अपनी माँ को पाकर आश्चर्य हुआ। अपनी माँ को पूर्णतः स्वस्थ, प्रफुल्लित युवती के रूप में देखकर समीर प्रसन्न हुआ। वह जान गया कि जंगल की बूढ़ी औरत ने उसकी इच्छा पूरी कर दी थी और वह अपने जीवन में वापस आ गया था।

जल्दी करो समीर। तुम बहुत अधिक सोते हो। यदि तुम अभी इसी समय नहीं उठे तो तुम्हारे सपने तुम्हें स्कूल के लिए देर कर देंगे। उसकी माँ ने झिड़की देते हुए कहा। कहना व्यर्थ है समीर इस सुबह बिस्तर से तेजी से उठा और अपनी आशा के अनुरूप रहने लगा। समीर परिपूर्ण जीवन जीने लगा जिसमें बहुत से आनंद, हर्ष और विजयोत्सव थे लेकिन यह तभी संभव हुआ जब उसने भविष्य के लिए वर्तमान को त्यागना बंद कर दिया और वर्तमान में जीने लगा।



रिश्ता



कुन्दन कुमार

सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)



रिश्ता शब्द जेहन में आते ही माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी आदि शब्द मन में कौंधने लगते हैं। परन्तु रिश्ता शब्द का दायरा इतना सीमित न होकर वास्तव में पूरे ब्रम्हांड की रचना तक फैला हुआ है। जैसे प्रकृति-मनुष्य का रिश्ता, सूर्य चन्द्रमा का रिश्ता, पशु-पक्षी का मनुष्य के साथ रिश्ता, आदि। समस्त प्रकृति प्रदत्त रिश्तों में मनुष्य का अन्य के साथ रिश्ता सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। आज की तथाकथित आधुनिक जीवन शैली में रिश्तों का मूल अथवा आधार का तेजी से क्षरण हो रहा है। चाहे वह मनुष्य का प्रकृति से रिश्ता हो, मनुष्य से रिश्ता हो, सामाजिक बंधन का रिश्ता हो, पारिवारिक रिश्ता हो, हर जगह नये तरीकों से सुविधानुसार रिश्तों की परिभाषा लिखी जा रही है। परिणामस्वरूप प्राकृतिक असंतुलन का प्रकोप, छिन्न-भिन्न होता सामाजिक ताना-बाना, पारिवारिक बिखराव, मानसिक तनाव आधुनिक मानव जीवन के लिए नई चुनौतियाँ पेश कर रहा है। जरूरतों की नींव पर बना कोई भी रिश्ता लंबा नहीं चल सकता। आज के बदलते परिवेश में लोगों ने रिश्तों की अहमियत को भी बदल डाला है। वर्तमान परिवेश में रिश्तों की अहमियत इतनी

बदल चुकी है कि कोई भी व्यक्ति चाहे अपनी व्यस्तता के कारण हो या अपनी निजी स्वार्थवश रिश्तों को निभाने के बजाय ढो रहा है।

अगर पुरातन सभ्यता की ओर देखें तो रिश्तों की अपनी अहमियत होती थी। सिर्फ वास्तविक रिश्तों ही नहीं बल्कि अपने गाँव या शहर में भी अपने आप ही रिश्ते बनते थे जिसे लोग पूरी शिद्दत एवं आत्मीयता के साथ निभाते थे। आज समाज में भौतिकवादी प्रवृत्तियाँ तेजी से बढ़ रही हैं। फलस्वरूप इंसानी रिश्तों का महत्व कम होता जा रहा है। सभी रिश्तों पर स्वार्थ हावी होता जा रहा है। सभी लोग आज एक दूसरे को पीछे छोड़ने की रेस में रिश्तों की तिलांजलि दे रहे हैं। निजी स्वार्थ पर रिश्तों का महत्व नगण्य होता जा रहा है। समाज में रिश्तों की अहमियत में कमी आने से मनुष्य ने अपना स्वभाविक स्वरूप खो दिया है। फलस्वरूप समाज में अमानवीय गतिविधियों का तेजी से प्रसार हो रहा है। हम मानव स्वरूप में भी दानव बनते जा रहे हैं। अतः अगर हमें मानव सभ्यता को दीर्घायु बनाना है तो हमें समस्त रिश्तों की पुरातन परिभाषा को अमल में लाना होगा।

छत्तीसगढ़ के लोक नृत्य



राजेश कुमार वर्मा
वरिष्ठ लेखा परीक्षक



1. सुआ नृत्य :- सुआ छ.ग. में मूलतः महिलाओं और किशोरियों का नृत्य पर्व है। छ.ग. में सुआ नृत्य की लोकप्रियता सबसे अधिक है इसमें सभी जाति वर्ग की स्त्रियां भाग लेती हैं। दीपावली के कुछ दिन पूर्व से ही यह नृत्य शुरू होता है और दीपावली की रात्रि में शिव-गौरा विवाह के आयोजन में समापन होता है इस कारण सुआ नृत्य को गौरा नृत्य भी कहा जाता है। महिलाएं अपने-अपने गांवों से टोली बनाकर ताली की थाप पर नृत्य करती हुए गीत गाती हैं। घेरे के बीच में एक युवती सिर पर लाल कपड़ा ढंके टोकनी लिये हुए होती है। टोकनी में धान भरकर उसमें मिट्टी के बने दो तोते सजाकर रख दिये जाते हैं। ये तोते शिव-पार्वती के प्रतीक माने जाते हैं। धान कटाई के बाद छ.ग. में सुआ नृत्य अत्यधिक उमंग एवं उल्लास के साथ किया जाता है। सुआ गीत नारी जीवन के समस्त सुख और दुख के प्रेम-धान करुणा के गीत हैं।

2. चन्देनी :- लोरिक चंदा के नाम से ख्यात चन्देनी छ.ग. में दो शौलियों में पाया जाता है। पुरुष पात्र विशेष वेश-भूषा में नृत्य के साथ चन्देनी कथा प्रस्तुत करते हैं और यह नृत्य रात भर चलता है। चन्देनी नृत्य में टिमकी, ढोलक आदि की संगत परम्परागत है। लोरिक चंदा मूलतः प्रेमगाथा है।

3. राउत नाचा :- यह नाचा दीपावली के अवसर पर किया जाने वाला एक नृत्य है इस नृत्य में लोग विशेष वेश-भूषा

पहनकर हाथ में सजी हुई डंडा लेकर गाते और नाचते हुए निकलते हैं। नृत्य के पहले दोहे गाये जाते हैं यह दोहा प्रेम, हास्य तथा पौराणिक संदर्भ के लिए होते हैं।

4. पंथी नाचा :- पंथी नृत्य छ.ग. की सतनामी जाति का नृत्य है, पंथी गीतों का प्रमुख विषय गुरु घासीदास का चरित्र होता है। पंथी नृत्य के मुख्य वाद्य मांदर एवं झांझ होते हैं। नृत्य का आरंभ धीमी गति से होता है पर जैसे जैसे गीत और मृदंग की लय तेज होती है वैसे-वैसे नर्तकों की चेष्टाएं तेज होती जाती हैं और समापन तेज गति के साथ चरम पर होता है। इस नृत्य को देवदास बंजारे एवं उसके साथियों ने देश-विदेश में काफी प्रतिष्ठित किया है।

5. करमा नृत्य :- छ.ग. में गोंड, बैगा, उरांव, कमार, कवर, पंडो, बिंझवार, बिरहोर जनजातियों में करमा नृत्य किया जाता है, करमा नृत्य गीत “कर्म देवता” को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है। करमा नृत्य में प्रायः 8 पुरुष एवं 8 स्त्रियां भाग लेती हैं इसमें युवक और युवतियां गोलार्ध बनाकर आमने-सामने खड़े हो जाते इस नृत्य में युवक और युवती आगे-पीछे चलने में एक दूसरे के अंगूठे को छूने की कोशिश





करते हैं।

6. फाग नृत्य :- इस नृत्य का आयोजन गोंड एवं बैगा जनजाति द्वारा होली के समय पर किया जाता है, इसमें गांव के सभी युवक-युवती अति उल्लास से भाग लेते हैं। इस नृत्य में एक या दो व्यक्ति लकड़ी के मुखौटे और हाथ में लकड़ी की चिड़िया आदि नचा-नचाकर भरपूर मनोरंजन करते हैं।

7. दशहरानृत्य :- बैगा जनजाति द्वारा इस नृत्य को विजयादशमी से प्रारंभ होने के कारण इस नृत्य का नाम दशहरा पड़ा। दशहरा नृत्य एक प्रकार से बैगा जनजाति में सामाजिक व्यवहार की कलात्मक सम्पूर्ति है।



8. सरहूल नृत्य :- यह उरांव और मुण्डा जनजाति का नृत्य है उरांव जनजाति के लोग वर्ष में चैत्र मास की पूर्णिमा के दिन “साल” वृक्ष की पूजा का आयोजन करते हैं और उसके आसपास नृत्य करते हैं। इस नृत्य में पुरुष पीला साफा बाँधते हैं और महिला अपने जूडों में बगुले के पंख की कलगी लगाती हैं। इस नृत्य का मुख्य वाद्य मांदर एवं झांझ होता है।

9. दाहिकांदो :- छ.ग. के मैदानी क्षेत्र के आदिवासी कृष्णजन्माष्टमी के अवसर पर इस नृत्य का प्रदर्शन करते हैं यह नृत्य करमा और रास का मिला जुला रूप हैं। इसमें कदम्ब के पेड़ के नीचे राधा-कृष्ण की मूर्ति स्थापित कर इसके चारों ओर नृत्य करते हुए कृष्ण लीला का अभिनय करते हैं।

10. माओपाटा :- यह बस्तर की मुड़िया जनजाती में एक प्रसिद्ध लोक नाट्य है, यह लोक नाट्य शिकार कथा पर आधारित होता है। इसमें आखेट से लेकर शिकार करके सकुशल वापस आने व समारोह मनाने तक की घटनाओं का नाटकीय मंचन किया जाता है और अंत में सिरहा देवता को मदिरा अर्पित कर प्रसाद रूप में सभी आदिवासी मदिरापान करते हैं और आनंद मनाते हैं।



प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत और भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक



विजय केसवानी
लेखापरीक्षा अधिकारी

‘प्राकृतिक न्याय’ शब्द रोमन शब्द ‘Jus Naturale’ से लिया गया है, जिसका अर्थ है प्राकृतिक कानून, न्याय, साम्यता और अच्छे विवेक के सिद्धांत। प्राकृतिक न्याय न्यायशास्त्र की सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा है जिसका न्यायिक, अर्ध-न्यायिक और प्रशासनिक प्रक्रियाओं में पालन किया जाता है और जो सभी सभ्य राज्यों द्वारा मान्यता प्राप्त है। प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का पालन करने का उद्देश्य अन्याय को रोकना है। प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत में दो सबसे महत्वपूर्ण नियम शामिल हैं जो लैटिन मैक्सिमों से प्राप्त हुए हैं:

1. **Nemo Jude in causa sua** : कोई भी व्यक्ति अपने स्वयं के कारण में जज नहीं हो सकता है अथवा पूर्वाग्रह के विरुद्ध नियम।
2. **Audi Alteram Partem** : निष्पक्ष सुनवाई का नियम अथवा किसी को भी सुने बिना निंदा/दण्डित नहीं किया जाना चाहिए।

ये सिद्धांत हमारे संविधान के विभिन्न प्रावधानों में भी अंतर्निहित हैं। मुख्य रूप से, यह अनुच्छेद 21 में देखा गया है जो कहता है, ‘कोई भी व्यक्ति कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अलावा अपने जीवन या व्यक्तिगत स्वतंत्रता से वंचित नहीं होगा।’ यह वह प्रक्रिया है जो कि प्राकृतिक न्याय के नियम

हैं। इसके अलावा, इन सिद्धांतों का अनुप्रयोग विभिन्न संरचनाओं और प्रावधानों में भी देखा जाता है।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

अनुच्छेद 148 सीएजी के गठन के लिए प्रावधानित करता है जिसे संवैधानिक दर्जा दिया गया है एवं अन्य प्रावधान जिसमें मुख्यतः इनका निष्कासन सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश की तरह रखा गया है जिससे ये केंद्र और राज्यों के खातों और लेखा परीक्षा के संबंध में अपने दायित्वों का निर्वाह स्वतंत्र रूप से कर सके। इस प्रकार, सरकार से पृथक सीएजी की संस्था का निर्माण प्राकृतिक न्याय के पहले सिद्धांत का पालन था।

सीएजी द्वारा अपने कार्यों को करने के लिए विकसित की गयी प्रक्रियाओं के दृश्य में यह संस्थान प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत के अनुप्रयोग में भारतीय न्यायालयों के समकक्ष एवं अन्य संस्थानों में अग्रणी है। प्राकृतिक न्याय सीएजी की प्रक्रियाओं में गहराई से निहित है, जो कि समय के साथ विकसित किये गए हैं एवं दायित्वों का निर्वाह में इनका पालन किया जाता है। सरकार के विभागों के लेखा परीक्षा के संबंध में निम्नलिखित प्रक्रियाएं चित्रित हैं जो कि व्यापक नहीं हैं:

- किसी इकाई की लेखा परीक्षा के दौरान आपत्तियां हाफ मार्जिन के रूप में दी जाती हैं और उस पर उत्तर मांगा

जाता है। यह पहला चरण है जब लेखा परीक्षा इकाई को अपनी टिप्पणियों को सामने रखने का अवसर दिया जाता है। निरीक्षण प्रतिवेदन को अंतिम रूप देते समय, सभी आपत्तियों पर लेखा परीक्षा इकाई के साथ फिर से निर्गम बैठक के रूप में चर्चा की जाती है।

- निष्कर्षों को निरीक्षण रिपोर्ट के रूप में सूचित किया जाता है जो कि मुख्यालय के स्तर पर साक्ष्य और उत्तरों को ध्यान में रखते हुए पुनरीक्षण किए जाते हैं जो सबसे महत्वपूर्ण चरण है। निरीक्षण रिपोर्ट जारी कर पुनः उत्तर मांगे जाते हैं।

- महत्वपूर्ण निष्कर्ष विभाग को तथ्यात्मक नोट्स / विवरण के रूप में जारी किए जाते हैं और उत्तरों के तारतम्य में निष्कर्षों को संभावित ड्राफ्ट पैराग्राफ में बदल दिया जाता है, जो फिर से उनकी टिप्पणियों के लिए विभाग के शीर्ष स्तर पर जारी किए जाते हैं।

- ड्राफ्ट पैराग्राफ एवं निष्पादन लेखा परीक्षा प्रतिवेदनों को लेखा परीक्षित संस्था के प्रमुख के साथ निर्गम बैठक के रूप में भी चर्चा की जाती है और अंततः सीएजी की रिपोर्ट में शामिल करने के लिए मुख्यालय द्वारा पुनरीक्षण किया जाता है। ये सभी स्तर पूर्ण व्यावसायिकता और लेखा परीक्षा मानकों के साथ पालन किये जाते हैं और इसी तरह का नियंत्रण सीएजी के सभी कार्यों में विद्यमान है।

इस प्रकार, सीएजी द्वारा सभी स्तरों और प्रक्रियाओं की रूप-रेखा प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों को पूर्ण भावना से पालन करने हेतु बनाई गयी है।

हम अनुकरणीय इतिहास वाले इस महान संस्थान का हिस्सा होने पर गर्व की भावना महसूस करते हैं।



हमारी राजभाषा हिन्दी



प्रेम प्रकाश यादव
डाटा एंट्री ऑपरेटर

जब मनुष्य इस सृष्टि में जन्म पश्चात होश संभालता है तो वह अपने माता-पिता या आसपास के वातावरण से उसी भाषा में बोलना सीखता है। इस तरह भाषा सीखने का यह काम लगातार चलता रहता है। प्रत्येक राष्ट्र की अपनी अलग-अलग भाषाएं होती हैं। लेकिन उनका राजकाज जिस भाषा में होता है और जो जन संपर्क की भाषा होती है, उसे ही राजभाषा का दर्जा प्राप्त होता है।

भारत एक खूबसूरत बहुभाषी राष्ट्र है जिसकी अपनी एक राष्ट्रभाषा है 'हिन्दी', जिसे 14 सितंबर 1949 को राजभाषा का दर्जा दिया गया था। हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए 1953 से संपूर्ण भारत में प्रतिवर्ष 14 सितंबर को 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है।

संविधान के अनुच्छेद 343 के खंड-1 में कहा गया है कि भारत संघ की राजभाषा हिन्दी व लिपि देवनागरी होगी। संविधान के आठवीं अनुसूची में उल्लिखित 22 भाषाएं अर्थात् हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, गुजराती, बंगाली, असमी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकड़ी, मैथिली, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िया, पंजाबी, संथाली, सिंधी, तमिल, तेलुगू, बोडो, डोगरी, भारत की अधिकारिक भाषा है। हिन्दी विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। विश्व में मंदारिन चाइनीज, अंग्रेजी के बाद सबसे ज्यादा बोले जाने वाली हिन्दी तीसरी भाषा है। यह हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की भाषा है।

हम जानते हैं कि बहुत सारे भारतीय, भारत के अलावा विकासशील व विकसित देशों में रह रहे हैं, इस प्रकार हिन्दी भाषा का प्रयोग विदेशों में भी किया जा रहा है।

भारत के अलावा यह नेपाल, फिजी, पाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका, बांग्लादेश, त्रिनिदाद व टोबैगो, सिंगापुर, अमेरिका, युगांडा, जर्मनी, मारीशस आदि देशों में बोली जाती है।

हिन्दी के संबंध में कुछ महापुरुषों के विचार-

- जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

- राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है।

महात्मा गाँधी

- हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।

सुमित्रा नंदन पंत

- निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति के मूल।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र

- हिन्दी विश्व की महान भाषा है।

राहुल सांकृत्यायन

- हिन्दी स्वयं अपनी ताकत से बढ़ेगी।

पंडित जवाहर लाल नेहरू

- हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

स्वामी दयानंद सरस्वती

- मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परंतु मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता।

विनोभा भावे

ज्ञान के बिना सच्चे की परख नामुमकिन



सुधीर कुमार माझी
लेखापरीक्षक

एक जौहरी के निधन के बाद उसका परिवार संकट में पड़ गया। खाने के भी लाले पड़ गए। एक दिन उसकी पत्नी ने अपने बेटे को नीलम का एक हार देकर कहा- 'बेटा, इसे अपने चाचा की दुकान पर ले जाओ और कहना कि इसे बेचकर वे कुछ रुपए दे दें।' बेटा वह हार लेकर चाचाजी के पास गया। चाचा ने हार को अच्छी तरह से देख-परख कर कहा- 'बेटा, मां से कहना कि अभी बाजार बहुत मंदा है। थोड़ा रुककर बेचना, अच्छे दाम मिलेंगे।' और उसे थोड़े से रुपए देकर कहा कि तुम कल से दुकान पर आकर बैठना। अगले दिन से वह लड़का रोज दुकान पर जाने लगा और वहां हीरे-रत्नों की परख का काम सीखने लगा। कुछ दिनों में वह बड़ा पारखी बन गया और लोग दूर-दूर से अपने हीरे की परख कराने उसके पास आने लगे। एक दिन उसके चाचा ने

कहा, 'बेटा, अपनी मां से वह हार लेकर आना और कहना कि अब बाजार बहुत तेज है, उसके अच्छे दाम मिल जाएंगे।' मां से हार लेकर उसने परखा तो पाया कि वह तो नकली है। वह उसे घर पर ही छोड़कर दुकान लौट आया। चाचा ने पूछा, 'हार नहीं लाए?' उसने कहा, 'वह तो नकली था।'।

तब चाचा ने कहा- 'जब तुम पहली बार हार लेकर आए थे, तब मैं उसे नकली बता देता तो तुम सोचते कि आज हम पर बुरा वक्त आया, तो चाचा हमारी चीज को भी नकली बताने लगे और आज जब तुम्हें खुद ज्ञान हो गया, तो पता चल गया कि हार सचमुच नकली है।'।

सच यह है कि ज्ञान के बिना इस संसार में हम जो भी सोचते, देखते और जानते हैं, वह सब गलत है। और ऐसे ही गलत फहमी का शिकार होकर रिश्ते बिगड़ते हैं।



छत्तीसगढ़ का लोकपर्व - 'हरेली'



शिव कुमार ध्रुव
एम.टी.एस.

छत्तीसगढ़ के चारों ओर हरे-भरे वनों से आच्छादित दृश्य मन को अपनी ओर आकर्षित करते हैं, चारों ओर पहाड़ियों, नदियों, गुफाओं, कंदराओं से घिरा प्रकृति का अनमोल उपहार बेशकीमती धरती के गर्भ में छिपे खजाने, झरते झरने, बलखाती नदियां और पक्षियों का कलरव देखकर यूं ही खुशी और आनंद का अनुभव होने लगता है।

हां एक बात और यहां की लोक संस्कृति - लोक परंपरा लोक त्यौहार, मड़ई मेला का विशेष स्थान है। कहने को तो यहां बारहों महीने त्यौहार का महौल होता है। चैत्र माह की चैतराई से लेकर फाल्गुन की रंग-बिरंगी होली तक जन मानस प्रकृति के रंग में रंगा रहता है। छत्तीसगढ़ आदिवासी बाहुल्य (अनुसूचित जन जाति) क्षेत्र होने के कारण यहां की संस्कृति में मूल निवासियों की उपस्थिति को हम नजर-अंदाज नहीं कर सकते। त्यौहार की श्रृंखला में सावन माह के आरंभ होते ही त्यौहार प्रारंभ होता है, सावन के कृष्ण पक्ष को अमावस्या के दिन 'हरेली' का त्यौहार बड़े ही धूम-धाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। जैसे कि नाम से प्रतीत होता है- 'हरियाली का पर्व' तपती धूप के बाद सावन के रिमझिम बारिश में धरती ने मानों हरी, चूनरियां ओढ़ ली हो, खेतों में धान के छोटे-छोटे पौधे, सूखे-रूखे पेड़ों पर हरे-हरे पत्ते-फूलों से लदी डालियां 'आम के बाग' में कजरी गाती सखियां कितना मनमोहक होता है, यह दृश्य शायद इसलिए 'प्रकृति और मानव' के बीच संवाद को 'हरेली' का नाम दे दिया गया है। हमारे छत्तीसगढ़ में यह किसानों का मुख्य त्यौहार होता है। धरती पुत्र वैसे तो बारहों महीने धरती से जुड़े रहकर खेती किसानी करते हैं, लेकिन वर्ष में एक दिन उन्हें और उनके सहयोगी पशु मित्र एवं औजार जो खेती करने के काम में आते

हैं उन्हें इसी दिन विश्राम मिलता है। इसका प्रयोग इस दिन निषेध होता है। 'हरेली' के दिन सबसे पहले सुबह-सुबह गांव में ग्वाले जो गाय बैल चराने ले जाते हैं या गांव का कोटवार नीम की डालियों को घर-घर लगाकर (हांका) आवाज देता है कि आज हरेली है गांव के सभी लोग आज खेत नहीं जायेंगे घर में इस त्यौहार को मनायें और गांव के मैदान में सब लोग लोकखेल का आनंद लेंगे। इस तरह कोटवार के द्वारा मुनादी करवा दी जाती है।

घर की महिलायें घर आंगन को गोबर से लीपकर रसोई में बनने वाले पकवान की तैयारी करती हैं। इस दिन चावल आटे के पकवान मीठा चीला, दूध फरा, खीर पूड़ी बनाते हैं। पुरुष वर्ग गायों और बैलों को प्रयोग में आने वाले औजार को जैसे हल, खुरपी, रापा, कुदाली, इत्यादि को मांज-धोकर बैलों को कुल देवता (बुढ़ादेव) की पूजा पाठ कर इन औजारों की भी पूजा अर्चना करते हैं। चीला को प्रसाद गुड़ चना, नारियल के रूप में दिया जाता है। शीतला माता, ठाकुर देव की पूजा अर्चना करते हैं क्योंकि बैगा के द्वारा सावन महीने के प्रारंभ में गांव को बांधा जाता है और गांव के रक्षक देव से अरजी की जाती है कि वे इस गांव के लोगों को, पशु, मित्रों तथा पेड़ पौधों को बीमारियों से रक्षा करेंगे। यह प्रार्थना कर गांव को मंत्रों के द्वारा बांधा जाता है ताकि बुरी शक्तियां गांव में प्रवेश न करें।

मान्यता-औषधियों जड़ी-बूटियों के जानकार 'बैगा' इस दिन जंगलों से जड़ी-बूटियां लाकर उसे मंत्र से अभिमंत्रित कर रखते हैं। कहा जाता है कि, इस दिन लाया हुआ औषधी जड़ी-बूटी कारगर सिद्ध होता है। असरकारक होता है। इसलिए इस दिन बैगा जड़ी-बूटी की तलाश में भी

जाते हैं घर के बाहर गांव में दिवारों पर गोबर से रक्षक पुतले बनाये जाते हैं ताकि बुरी शक्तियां घर में प्रवेश ना करें। 'हरेली' के दिन जादू-टोना टोटका इत्यादि का विशेष दिन होता है। इसलिए गांव में इस दिन रात्रि को बैगा या तंत्र विद्याओं को जागृत करने के लिये रात- भर मंत्रोच्चार करते हैं। तथा सिद्धियां प्राप्त करते हैं। इस दिन छत्तीसगढ़ में 'टोनही' भी अपनी शक्तियों को जगाती है ऐसी मान्यता है। लेकिन अब आधुनिक युग में इन बातों को अंधविश्वास की श्रेणी में रखा जाता है इसलिए कि हमारे छत्तीसगढ़ में टोनही प्रताड़ना की अधिकता है जैसे किसी महिला को टोनही कह कर उसे मारना, पीटना, प्रताड़ित करना अपराध की श्रेणी में आता है। अब धीरे-धीरे इस टोनही प्रथा में कमी आ रही है। कारण है शिक्षा का, अब लोग शिक्षित हो रहे हैं और समझ रहे हैं। वैज्ञानिक युग में इस तरह की बातें अच्छी नहीं लगती। गांव के प्रत्येक घर में औजारों की पूजा होती है। बैलों को खिचड़ी खिलाई जाती है। इस दिन पशुओं को आटा, नमक एवं खम्हार के पत्रों को खिलाया जाता है दशमूल अंदा और शरे अंदा को मिलाकर खम्हार के पत्तों को खिलाने से पशुओं को जैसे मुह से संबंधित रोग मुह पकी खुरपा का रोग नहीं होता तथा पशु स्वस्थ रहते हैं। पशुओं में रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। वनांचलों में इस त्यौहार को बड़े ही सादे तरीके से मनाते हैं इस दिन प्रकृति को जो पहली बरसात में भूमि पर पड़ने से अपने आप उग आते हैं उन पौधों को फलों, कंदों को फूलो-फल जिसमें हल ना चला हो जो अपने आप उगते हैं ऐसी चीजों को प्रकृति को भेंट देकर उसे प्रसाद रूप में ग्रहण करते हैं नृत्य गीत के साथ नाच गाकर यह पर्व मनाते हैं। प्रकृति का धन्यवाद दिया जाता है। गांव में इसदिन बच्चे बूढ़े जवान सभी गोड़ी मचते हैं इस त्यौहार में गोड़ी का विशेष स्थान है। दो बांस या लंबी लकड़ियों के सहारे अंगुठे में पैर फसा कर कुछ फीट की उंचाई पर पैर को उपर रखकर बांस को हांथ में पकड़कर चलते हैं इसे रोड़ी पर चलना कहा जाता है। कहा जाता है कि आवश्यकता अविष्कार की जननी होती है। संभव है कि उस जमाने में नदी नाले या कीचड़ में सने रास्तों को पार करने के लिए इस गोड़ी का अविष्कार किया गया हो। जिसे आज हम सभी लोकखेल लोक नृत्य में देखते

हैं गांव में गोड़ी दौड़ का आयोजन किया जाता है तथा प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया जाता है। इस दिन बिल्लस, भौरा, बांटी, डंडा-पचरंगा, बीस- अमृत, फुगड़ी, गिल्ली-डंडा, पोसम-पा, अटकन-बटकन, लोक खेल प्रतियोगितायें होती हैं। छत्तीसगढ़ सरकार इन खेलों को प्रोत्साहन को सहेजने का काम कर रही हैं।

'हरेली' में नीम की डालियों को लगाने का यह कारण है कि नीम आयुर्वेद में औषधि है यह रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है तथा त्वचा संबंधी रोगों के लिए खासकर औषधि है। घर के दरवाजों पर खोंचना शुभ माना जाता है। तथा इसका ये अर्थ भी है कि जहां नीम होता है वहां कीड़े-मकौड़े इत्यादि नहीं आते हैं नीम वातावरण को शुद्ध बना देता है। यही कारण है कि नीम की डालियां घरों-घर इस दिन लगाया जाता है बदले में घर के लोग व्यक्ति को पारिश्रमिक स्वरूप रूपये, चावल, दाल आदि कुछ भी दान में देते हैं। एक संदेश यह भी होता है कि, मनुष्यों को सदा प्रकृति का उपकार मानकर सदैव उसके संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रयास करते रहना चाहिए। महंगे उपहार देने के बदले हम फल-फूल-पेड़ पौधों को उपहार में दें जो उस पल की याद को सालों-साल सहेजे रखेंगे। आइये हम सब मिलकर अपनी धरती की हरियाली को बनायें रखने में स्वयं और प्रकृति का सहयोग करें।

आगे-आगे हरेली तिहार आगे।

मचगे-मचगे गोड़ी के धूम मचगे।।

कका जावत हे बईला नागर धोये बर।

काकी हऊला धर जावत हे पानी लाये बर।

तुलसी चौरा मे दिया कलश में मढ़ाये।

कुल देवी देवता ल (बुढ़ादेव) सुमिरे

महुआ के फूल हुम धूप जलाये।

मुचमुचही भऊजी ह चऊर पिसान के चीला लहुटाये।

गुरतुर-गुरतुर गुलगुला भजीया ला

डोकरा बबा चबाये।

बांस लायें हे भइया छेलत हवय दिनभर।

गोड़ी बनही सुन्दर-सुन्दर गोड़ी मचबो दिन भर।

आगे हरेली तिहार संगी झुमो नाचो आज।

अनमोल वचन



प्रेम प्रकाश यादव
डाटा एंट्री ऑपरेटर

- 1 जिंदगी जीना आसान नहीं होता, बिना संघर्ष के कोई महान नहीं होता, जब तक न पड़े हथौड़े की चोट, पत्थर भी भगवान नहीं होता।
- 2 जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं की उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश नहीं की।
- 3 जिसने अपनी इच्छाओं पर काबू पा लिया, उस मनुष्य ने जीवन के दुखों पर काबू पा लिया।
- 4 भरोसा जीता जाता है, मांगा नहीं जाता। ये वो दौलत है जिसे पाया जाता है, कमाया नहीं जाता।
- 5 जिंदगी में टेंशन ही टेंशन है फिर भी इन लबों पर मुस्कान है, क्योंकि जीना जब हर हाल में है तो मुस्कुरा के जीने में क्या नुकसान है।
- 6 अच्छे के साथ अच्छा बने, बुरे के साथ बुरा नहीं। क्योंकि हीरे को हीरे से तराशा तो जा सकता है पर कीचड़ से कीचड़ साफ नहीं हो सकता है।
- 7 मुसीबत में ये मत सोचो कि अब कौन काम आएगा? बल्कि ये सोचो कि अब कौन छोड़के जाएगा।
- 8 वाणी में भी अजीब शक्ति होती है, कड़वा बोलने वाले का शहद भी नहीं बिकता, और मीठा बोलने वाले की मिर्ची भी बिक जाती है।
- 9 सुधरना-बिगड़ना मनुष्य के स्वभाव पर निर्भर करता है न कि माहौल पर। रामायण में दो पात्र हैं- विभीषण और कैकेयी। विभीषण रावण के राज्य में रहकर भी नहीं बिगड़ा और कैकेयी राम के राज्य में रहकर भी नहीं सुधरी।
- 10 किसी का ये सोचकर साथ मत छोड़ना कि उसके

पास कुछ नहीं तुम्हें देने के लिए, बस ये सोचकर साथ निभाना कि उसके पास कुछ नहीं तुम्हारे सिवा खोने के लिए।

11 बड़ा आदमी, बनना अच्छी बात है लेकिन अच्छा आदमी बनना बड़ी बात है।

12 जिंदगी में अगर बुरा वक्त नहीं आता तो अपनों में छुपे हुए गैर और गैरों में छुपे हुए अपने कभी नजर नहीं आते।

13 शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है, एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है। शिक्षा सौंदर्य और यौवन को परास्त कर देती है।

14 कामयाब होने के लिए अच्छे मित्रों की जरूरत होती है और ज्यादा कामयाब होने के लिए अच्छे शत्रुओं की आवश्यकता होती है।

15 पहले आठ वर्षों तक अपने बच्चों को प्यार दे, अगले आठ वर्षों तक डांट कर रखें और जब वे सोलह वर्ष के हो जाए तो उसके साथ एक अच्छे मित्र की तरह व्यवहार करें।

16 जैसे एक बछड़ा हजारों गायों के झुंड में, अपनी मां के पीछे चलता है, उसी प्रकार आदमी के अच्छे और बुरे कर्म उसके पीछे चलते हैं।

17 फूलों की सुगंध केवल वायु की दिशा में फैलती है लेकिन एक व्यक्ति की अच्छाई हर दिशा में फैलती है।

18 एक अनपढ़ व्यक्ति का जीवन उसी तरह से बेकार है जैसे कि कुत्ते की पूंछ, जो ना उसके पीछे का भाग ढकती है ना ही उसे कीड़े मकोड़ों के डंक से बचाती है।

19 पढ़ने के लिए जरूरी है एकाग्रता, एकाग्रता के लिए जरूरी है ध्यान। ध्यान से ही हम इंद्रियों पर संयम रखकर

एकाग्रता प्राप्त कर सकते हैं।

20 सबसे बड़ा पाप क्या है? खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है।

21 विश्व में अधिकांश लोग इसलिए असफल हो जाते हैं क्योंकि उनमें समय पर साहस का संचार नहीं हो पाता, वो भयभीत हो उठते हैं।

22 समय जिसका साथ देता है, वो बड़े बड़ों को मात देता है। अमीर के घर पर बैठा हुआ कौवा भी सबको मोर लगता है और गरीब का भूखा बच्चा भी सबको चोर लगता है।

23 अपने वो नहीं होते, जो तस्वीर में साथ खड़े होते हैं। अपने वो होते हैं जो तकलीफ में साथ खड़े होते हैं।

24 हम अपना भविष्य नहीं बदल सकते पर हम अपनी आदतें बदल सकते हैं और निश्चित रूप से हमारी आदतें हमारा भविष्य बदल देंगी।

25 भाग्य उनका साथ देता है, जो हर संकट का सामना करके भी अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ रहते हैं।

26 गंगा में नहा कर सब पाप धो आया, और वहीं से धोए पापों का पानी भी भर लाया। वाह रे इंसान तेरा यह तरीका समझ में ना आया।

27 भाग्यशाली वो नहीं होते जिन्हें सब कुछ अच्छा मिलता है, भाग्यशाली तो वो होते हैं जिन्हें जो मिलता है वो उसे ही अच्छा बना लेते हैं।

28 जब किसी का गुण दिखाई दे, तो मन को कैमरा बना लो। यदि किसी का अवगुण दिखाई दे, तो मन को आईना बना लो।

29 खुश रहने का सीधा एक ही मंत्र है, उम्मीद अपने आप से रखो किसी और से नहीं।

30 बीते हुए कल का अफसोस और आने वाले कल की चिंता दो ऐसे चोर हैं, जो हमारे आज की खूबसूरती को चुरा लेते हैं।

31 दूसरों पर हँसने से बेहतर है, खुद पर हँसे, क्योंकि दूसरों पर हँसने से अहंकार बढ़ता है और खुद पर हँसने से अहंकार टूटता है।

32 महानता इस बात में नहीं कि इंसान, कभी न गिरे, गिरना इंसान की नियति है, महानता तो गिरकर उठने और आगे बढ़ जाने में है।

33 जो हो गया उसे सोचा नहीं करते, जो मिल गया उसे खोया नहीं करते। हासिल उन्हीं को होती है सफलता, जो वक्त और हालात पर रोया नहीं करते।

34 समय ना लगाओ तय करने में, आपको करना क्या है? वरना समय तय कर लेगा आपका करना क्या है।

35 जो खो गया, उसके लिए रोया नहीं करते। जो पा लिया, उसे खोया नहीं करते। उनके ही सितारें चमकते हैं, जो मजबूरियों का रोना रोया नहीं करते।



वृक्ष - मित्र अभियान

आखिरकार आज दिनांक 13 जुलाई 2019 को हम सभी मित्र, आपस में बहुत विचार विमर्श के बाद वृक्षारोपण हेतु अपने अभियान, जिसे हमने वृक्षमित्र नाम दिया था, के लिए महालेखाकार कार्यालय के शासकीय आवासीय परिसर में एकत्रित हुए।

वृक्षमित्र अभियान एक छोटा सा लेकिन बहुत ही आवश्यक अभियान था जिसकी संकल्पना पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से कार्यालय के कुछ अधिकारियों ने कार्यालय की कैंटीन में खाने की मेज पर चर्चा के दौरान की और महालेखाकार (लेखा परीक्षा) की अनुमति और प्रोत्साहन से यह मूर्त रूप ले सका। इस अभियान की आवश्यकता और हमारे लिए यह किस प्रकार एक सुखद अनुभव रहा, आप सबके साथ साझा करना चाहते हैं।

कुछ सालों से पानी की कमी, पानी का बचाव, पेड़-पौधों की कम होती संख्या एवं पर्यावरण असंतुलन इत्यादि पर बहुत चर्चाएँ हो रही हैं। हम भी सजग नागरिक की तरह इन चर्चाओं में भाग लेते हैं और अपनी चिंता भी व्यक्त करते हैं परंतु सार्थक कदम नहीं उठा पाते हैं। इसी बात को थोड़े कड़े शब्दों में कहें तो हम चर्चा और चिंता करके अपने कर्तव्यों की इति-श्री मान लेते और अपने मन को बहला देते हैं, कि आगे की कार्यवाही स्थानीय निकाय, सरकारें अथवा अन्य लोग करेंगे या यह सोचते कि सिर्फ हमारी पहल से क्या होगा।

पर इस बार हम कार्यालय के साथियों ने गर्मी में ही यह तय कर लिया था कि इस बार वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में ही वृक्षारोपण करेंगे और कर के रहेंगे। इस दृढ़ निश्चय के साथ कार्यालय के लगभग 50 अधिकारियों ने ऑफिस कैंटीन में ही यह तय किया कि कार्यालय के आवासीय परिसर और वहाँ से कार्यालय तक के मार्ग में लगभग 250 पौधे रोपित करना है और इनकी कम से कम 3 सालों तक देखभाल और रक्षा करनी है।

यह संकल्प साकार हुआ 13 जुलाई 2019 को जब हमने अपनी पूर्व निर्धारित सीमा को पार करते हुए थोड़ा सा

आगे बढ़कर साथियों के साथ पौधे लगाना प्रारम्भ किया। उपस्थित मित्रों को देखा तो लगा कि सभी अपने जैसे ही हैं और सभी पहले कदम के इंतजार में थे। वे सब बेझिझक होकर मिट्टी में हाथ डालकर पौधे लगाने में कतई पीछे नहीं हट रहे थे। लोग ज्यादा थे, पौधे लगाने के लिए किसी को फावड़ा मिला, किसी को खुरपी, किसी को हजारों और कुछ खाली हाथ रह गए। जो लोग खाली हाथ रह गए उन्होंने गड्डों तक पौधों एवं मिट्टी को पहुंचाने की जिम्मेदारी संभाल ली। कुछ लोग देर से आए और उन्होंने पानी पिलाने को पुण्य कार्य मानते हुए लोगों तक जलापूर्ति के काम को ले लिया। उपस्थित वृक्षमित्रों का स्वयंस्फूर्त उत्साह स्कूल के दिनों की याद दिला रहा था। चमचमाती कारों, एक्टिवा एवं बाइक पर मिट्टी की बोरियाँ ढोयीं जा रही थीं। यह बोरियाँ हमें मिट्टी के भार का एहसास करा रही थीं कि इसी मिट्टी से हम बने हैं और यही हमारा गंतव्य है।

हम जिस मिट्टी में खाली पैर चलने से भी परहेज करते हैं आज उसे अपने हाथों से सजा सवांरकर नये पौधों के लिए तैयार कर रहे थे जो आगे आने वाली पीढ़ी के लिए जीवन वायु दे सके और हम अपने उत्तरदायित्वों का थोड़ा बोझ उतार सकें। जब हमारा पसीना मिट्टी में गिर रहा था तब इस बात का एहसास हो रहा था कि बरसों से हमारा किसान जो पसीना हमारे लिए बहाता है वह कितना कीमती है और उसके पीछे कितनी मेहनत और भावनाएँ छिपी हैं। हम आज उसकी उपज और उसके खेतों को समाप्त कर तथाकथित अधोसंरचना निर्मित करते जा रहे हैं उसी अधोसंरचना का प्रभाव हमारे पौधारोपण के हर गड्डे में दिखाई दे रहा था और हम इसका अवशिष्ट गड्डों से हटाते जा रहे थे। हमें अपने द्वारा फैलाए हुए कूड़े आज हर गड्डे में मिल रहे थे, पॉलिथीन/प्लास्टिक, कांच के टुकड़े, फैक्ट्रियों की धूल इत्यादि। दोस्तों, इससे यह स्पष्ट हो गया कि जो बोया वही हमने पाया।

कलम इस अभियान के वर्णन को रोकना नहीं चाहती क्योंकि हमने देखा कि जितने भी लोग आए थे सभी

दिलोजान से इस कार्य में लगे थे और बच्चों जैसा उनका उत्साह देखते बनता था। किसी का हाथ कटा (थोड़ा सा ही सही), किसी के पैर में कांटा लगा, किसी के कपड़े खराब हुए, पर सब इस नये अनुभव से खुश थे। सभी पसीने से तर बतर हो रहे थे, कोई किसी की टांग खींचकर अपनी थकान मिटा रहा था, कोई रोपित पौधों की संख्या बता कर खुश था, कोई उर्वरक की आवश्यकता पर जोर दे रहा था, कुछ लोग मिट्टी के प्रकारों की बात कर रहे थे, कोई आगे की कार्य-योजना पर बात कर रहा था और कोई बारिश की प्रार्थना। सब में एक किसान नज़र आ रहा था और सब खुश भी थे आधे दिन का किसान बन कर। वृक्ष मित्र अभियान हम सब के मित्रता के बंधन को अनायास ही और मजबूत कर गया था जिसका एहसास अपने अपने घर पहुंचकर हो रहा था।

वृक्षारोपण के पश्चात नाश्ते की व्यवस्था थी। नाश्ते के टेबल पर ही हमें कम से कम इस बात की अनुभूति हो चुकी थी कि यह एक अच्छी शुरुआत है जिसे सफल बनाने के लिए निरंतर प्रयास अत्यंत जरूरी है जैसे कि रोपित पौधों की

नियमित सिंचाई, पौधों पर जाली लगाने का कार्य और कम से कम छः महीने तक रोज एक बार इन पौधों का निरीक्षण और हाँ, कुछ छोटी पहलें जैसे कि घर एवं कार्यालय में पानी, भोजन, बिजली इत्यादि संसाधनों के अनावश्यक व्यय से बचना और यदि संभव हो तो संरक्षण की दिशा में प्रयास करना।

हमे अंदाजा नहीं था कि यह इतना सुखद एहसास होगा। पौधारोपण के दौरान छुई गई मिट्टी की खुशबू मेरे हाथों में बची रह गई और इसकी खुशबू दोपहर के भोजन का स्वाद बढ़ा रही थी। और अंत में सिर्फ स्कूल के दिनों के संत कबीर दास के दोहे को उद्धृत करूंगा जिसके मर्म का अनुभव एक बार पुनः किया।

जिन ढूँढा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।
मैं बपुरा बूड़न डरा, रहा किनारे बैठ।।

आएं, आगे बढ़े इस धरती को कुछ दे जाएं



संघर्ष की कहानी



अनुपम कुमार सिंह
सहायक लेखा अधिकारी

आज जहाँ समाज में हर तरफ निराशा, अविश्वास और प्रोत्साहित करने वाली भावना का अभाव दिखता है, ऐसे वक्त में भी कई युवाओं की प्रेरक कहानी सफलता की चाह रखने वाले हजारों युवाओं के लिए रामबाण का कार्य करती है। मैं भी अपने स्तर से ऐसे प्रेरक युवाओं को खोजता रहता हूँ तथा उम्मीद करता हूँ कि उनकी सच्ची और प्रेरक कहानी के माध्यम से प्रतिभागियों में 'एक उम्मीद की किरण जगा सकूँ।'

ऊर्जा के असीम स्रोत से ओत-प्रोत युवाओं के लिए सबसे पहले मैं, पूर्व प्रधानमंत्री और ओजस्वी महान कवि माननीय अटल बिहारी वाजपेयी की अनुपम पंक्तियाँ प्रस्तुत करना चाहूँगा:-

**छोटे मन से, कोई बड़ा नहीं होता,
टूटे मन से, कोई खड़ा नहीं होता**

आजकल युवा अपनी सफलता को लेकर इतने आशंकित होते हैं कि अपने उस डर की वजह से अपनी क्षमता का 50 प्रतिशत भी योगदान नहीं कर पाते और नतीजा आप जानते हैं। ठीक उसी प्रकार कई युवाओं को अपनी क्षमता का अंदाज़ा तक नहीं कि वे क्या कर सकते हैं? उनकी हालत रामायण के उस हनुमान की तरह है, जिन्हें खुद पता नहीं कि उनकी शक्ति क्या

है? या फिर रामायण के उस बालि की तरह जो एक वरदान पाकर (तुम जिससे भी लड़ोगे, उसकी आधी शक्ति क्षीण होकर तुम्हारे पास आ जाएगी) घमंड में चूर हो गया था।

तो आइये चर्चा करते हैं भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग के कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) छत्तीसगढ़, रायपुर में डाटा एंट्री ऑपरेटर के पद पर रहे दतिया, मध्यप्रदेश के सोंधा गाँव के श्री हरिशंकर अग्रवाल के सबसे छोटे और होनहार बेटे श्री आकाश अग्रवाल की।

श्री आकाश, भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग में महज 19 वर्ष की उम्र में कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित 'संयुक्त उच्च-मध्यमिक स्तरीय परीक्षा' पास कर डाटा एंट्री ऑपरेटर के लिए चयनित हुये। हमारे समाज में अभी भी सरकारी नौकरी की इतनी अहमियत है कि लोगों ने श्री आकाश की इतनी कम उम्र की सफलता को बहुत सराहा। इस सफलता से हमेशा आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षा रखने वाले श्री आकाश थोड़े शिथिल पड़ गए। अनमने ढंग से UPSC और राज्यों के PSC की तैयारी कर रहे थे। कभी-कभी कार्यालय से अवकाश लेकर, तो कभी कार्यालय के कार्य के साथ-साथ, किन्तु आकाश अपने प्रयास से परेशान थे। वे कार्यालय में रहकर भी खुश नहीं थे, क्योंकि उनकी

तैयारी PSC के लायक नहीं हो पा रही थी और इस वजह से वो शत-प्रतिशत न पढ़ रहे थे और न ही नौकरी कर पा रहे थे। वह बहुत परेशान रहने लगे उसके लिए एक तरफ नौकरी और दूसरी तरफ बेहतर भविष्य। इस वजह से वे अपनी आगे की पढ़ाई और नौकरी में सामंजस्य नहीं बैठा पा रहे थे।

श्री आकाश ने बताया कि वे बचपन में पढ़ाई में अच्छे थे। पाँचवीं कक्षा में समूचे तहसील में टॉप करने के कारण उनके अंदर अतिविश्वास ने घर कर लिया, परिणामस्वरूप पढ़ाई का स्तर गिरता चला गया और सातवीं में एक विषय पर पूरक आ गया था। लोगों ने उनकी योग्यता पर प्रश्न चिन्ह लगाना शुरू कर दिया जो लोग पांचवी के परिणाम के लिए उनकी पीठ थपथपाते थे वही पीठ पीछे मजाक करने लगे थे। तब उन्हें महसूस हुआ कि इस संसार में कुछ भी नियत नहीं है और यदि लोगों के वाहवाही के लिए काम करते रहे तो सफलता तो दूर सुख-चैन भी नसीब नहीं होगा। श्री आकाश जब भी दुविधा की स्थिति में होते तो वे स्व. अटल बिहारी बाजपेयी की निम्न कविताओं को स्मरण कर स्फुरित हो जाते हैं -

**क्या हार में, क्या जीत में, किंचित नहीं,
भयभीत मैं, कर्तव्य पथ पर, जो भी मिला,
यह भी सही, वह भी सही, वरदान नहीं
माँगूंगा, हो कुछ पर, हार नहीं मानूंगा।।**

श्री आकाश ने आगे बताया कि यदि पढ़ोगे नहीं, तो कोई-न-कोई धक्का मार के आगे निकल जाएगा। इसी भावना से प्रेरित होकर एक बार पुनः पढ़ाई में लग गया और लोगों की सुनना बंद कर दिया। इनके चार भाई हैं, घर की हालात अच्छी नहीं थी और पिताजी भी लोगों के पढ़ाई के प्रति उतने सजग नहीं थे और ऊपर से उनकी शराब की लत। तीनों बड़े भैया एमबीए, पीएमटी और कॉम्पटीशन की तैयारी के लिए ग्वालियर में रह रहे थे, तो पिताजी ने शर्त रखी कि अगर ग्वालियर जाकर आगे की पढ़ाई करनी है तो 12 वीं में 85 प्रतिशत से ऊपर लानी पड़ेगी, उस वक्त 85 प्रतिशत से अधिक अंक लाने पर मुख्यमंत्री जी के द्वारा 2500 रुपये अवार्ड के रूप में दिए जाते थे। अंततः परिणाम आया और अविश्वसनीय 87 प्रतिशत

अंक के साथ एक बार फिर श्री आकाश तहसील टॉपर बने। उनके भैया ने प्रतिभा को परख लिया था तो उन्होंने बैंक की कोचिंग लगवा दी और संयोग देखिये कि बैंक तो निकला ही साथ में SSC और CHSL में भी उत्तीर्ण हो गया। बारहवीं विज्ञान से स्नातक वाणिज्य और परास्नातक हिन्दी साहित्य से करने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री आकाश को लगा कि SSC और CHSL में चयन उनकी अंतिम मंजिल नहीं है। उनका मानना था संतुष्टि सफलता के द्वार बंद कर देती है। फिर उन्होंने यह जॉब छोड़ दी। कुछ लोगों उनके इस फैसले से स्तब्ध थे क्योंकि आज के इस प्रतियोगिता के होड़ में कोई भी नौकरी मुश्किल से मिलती है। लेकिन वे अपने फैसले पर थोड़ी बहुत आशंका को दरकिनार करते हुए अडिग बने रहे।

हिम्मत जुटा कर दोबारा तैयारी में जुट गये। सच ही कहते हैं - भाग्य हमेशा कर्मठ व्यक्तियों का साथ देता है, इन्हीं वाक्य को चरितार्थ करते हुए उन्होंने मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग की परीक्षा प्रथम प्रयास में ही उत्तीर्ण कर ली। श्री आकाश अभी जिला बाल संरक्षण अधिकारी के रूप में मध्यप्रदेश में अपनी सेवा दे रहे हैं लेकिन उनका ख्वाब अभी भी अपूर्ण है। वे चाहते हैं कि अपनी इसी मेहनत और लगन के बलबूते पर संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण करें।

अंत में उन्होंने कार्यालय महालेखाकार छत्तीसगढ़, रायपुर की पत्रिका 'मितान' के माध्यम से अपने संघर्षरत दोस्तों के लिए स्व. अटल बिहारी बाजपेयी की निम्न पंक्तियां समर्पित की:-

**हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा,
काल के कपाल पर लिखता-मिटता हूँ,
गीत नया गाता हूँ, गीत नया गाता हूँ**

(यह कार्यालय महालेखाकार छत्तीसगढ़, रायपुर के वार्षिक पत्रिका 'मितान' के लिए श्री आकाश अग्रवाल से अनुपम कुमार सिंह के बातचीत पर आधारित है।)





लिखना

दूर हो जाऊँ, तो याद लिखना ।
 पास आ जाऊँ, तो जज्बात लिखना ।
 बेवफा हो जाऊँ, तो मेरी नादानी लिखना ।
 प्यार में फना हो जाऊँ, तो एक कहानी लिखना ।
 मैं खिलखिलाती दिख जाऊँ, तो सुकून लिखना ।
 गर आंसुओं को छुपाऊँ, तो जुनून लिखना ।
 मैं नींद में मुस्कुराऊँ, तो ख्वाब लिखना ।
 मुझे नींद ना आए, तो मेहताब लिखना ।
 मेरी चूड़ियों की आवाज पे दरकार लिखना ।
 नजरों से हो बातें, तो बेकरार लिखना ।
 पलकें जो झुक जायें तो इकरार लिखना ।
 जो चुप न हो पाऊँ, तो अल्फाज लिखना ।
 मेरी राहत को तुम नमाज़ लिखना ।
 गुस्से में लाल हो जाऊँ, तो हसीन लिखना ।
 मेरी दुआओं को तुम आमीन लिखना ।
 मेरी शायरी को तुम मुलाकात लिखना ।
 पर जब भी मेरे नाम कोई खत लिखना ।
 मेरा नाम सिर्फ और सिर्फ मोहब्बत लिखना ।



अपूर्वा श्री
लेखापाल

देखना तुम

काँटों के बीच फैल के जैसे महकना तुम ।
 मेरे ख्वाबों में ना आने से खुद को रोकना तुम ।
 छोड़ आयी थी जो यादें उन्हें ना ओढ़ना तुम ।
 यादों से गर जाने लगी तो ना रोकना तुम ।
 मेरी ओर बढ़ रही राहों को मोड़ना तुम ।
 मेरे एहसासों को कहीं बेच देना तुम ।
 मेरे दर्द को जरा सह लेना तुम ।
 बस इतनी सी थी हमारी कहानी सोचना तुम ।
 सब ठीक हो जाएगा एक दिन देखना तुम ।



छोटा सा गाँव मेरा पूरा बिग बाजार था ..!!
एक नाई, एक मोची, एक लुहार था.....!!
छोटे छोटे घर थे, हर आदमी बड़ा दिलदार था....!!
कहीं भी रोटी खा लेते, हर घर में भोजन तैयार था.....!!
बाड़ी की सब्जी मजे से खाते थे,
जिसके आगे पनीर भी बेकार था.....!!
दो मिनट की मैगी नहीं, झटपट दलिया तैयार था...!!
नीम की निंबोली और शहतूत का सदाबहार था...!!
छोटा सा गाँव मेरा पूरा बिग बाजार था ..!!
अपना घड़ा कस के बजा लेते!!
समझो पूरा संगीतकार था.....!!
मुलतानी मिट्टी से तालाब में नहा लेते,
साबुन और स्विमिंग पूल बेकार था....!!
और कबड्डी खेल लेते, हमे कहाँ क्रिकेट का खुमार था...!!
दादी की कहानी सुन लेते, कहाँ टेलीविजन
और अखबार शुमार था....!!
घर परिवार को देख के खुश था,
सभी लोगों में बहुत प्यार था....!!
छोटा सा गाँव मेरा पूरा बिग बाजार था ..!!



श्री अरुण कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मेरा छोटा सा गाँव



पिता



नमन जैन

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जो कुछ न कहकर भी कह दे बहुत कुछ..
जिसका एक झूठ भी लगता हमें सच..
हर एक जरूरत हमारी जिसे है पता..
वो है हमें जन्म देने वाला पिता..

नौकरी के काम से हो चाहे कितने भी थके,
घर लौटते वक्त कोई खिलौना बाजार से लाने को रुके
फिर सारी थकान को दूर करके साथ
हमारे बांधे खुशियों का समां..
सच में वो पिता भी है और हमारी दूसरी माँ

खुद को नींद से रख के परे..
नींद दिलाने हमें सर पर हाथ फेरे..
कोई भी मांग हमारी हो वो कभी न भूले..
पिता ही हमारे मेला है वही हमारे झूले

हमें आगे बढ़ता देख..
कामयाबी से जुड़ता देख..
एक वो ही है, जो खुशी से फूले नहीं समाते..
और उस खुशी को कभी सामने नहीं ला पाते..

हमारी असफलता को भी सफलता में बदलने वाले..
हमें आग बनाकर घी जैसे हमारे अंदर डलने वाले..
एक वो ही है जिनका हमारे दिल में है पता..
और नाम तो बहुत है पर कहलाते हैं पिता...

गुस्सा कितने भी हो पर क्रूर नहीं होते..
पास न होकर भी दूर नहीं होते..
हमारी चिंता भी है उनकी ही चिंता..
इतना निस्वार्थी तो बस होता है पिता ।



मुखौटे पे मुखौटा



निशा ध्रुव
एमटीएस

कहानी जिंदगी की..

मुखौटे पे मुखौटा है
आज हर इंसान के,
डर है कहीं देख न लें
अंदर छुपे राज ये..
कहीं छिपा हुआ है छल कपट,
तो कहीं छिपे जखमों के निशान..
आँसुओं को कभी बना दे हँसी,
फरेब को भी दिखा दे प्यार ये..
जब भी आईने में देखें खुद को..
न जाने क्या चित्र नज़र आता है।
शायद यही वो हकीकत,
जिसे मुखौटे के पीछे हर कोई छिपाता है।
“चेहरे पर तो तुम अपने मुखौटा लगा लोगे
ये जो मन का आईना है,
उसका क्या करोगे? ”

ये जिन्दगी की कहानी है,
बहता हुआ सा पानी है,
हर पल कुछ नया दिखाता है,
कभी खुशियाँ कभी मायूसी दे जाता है,
भरकर अपने अन्दर खुशी को,
हर गम से सीखते चलो,
जो गिर गए तो क्या हुआ,
उठकर फिर आगे बढ़ो,
जब काले घने अन्धेरो में भी,
तुम दूँढ लोगे रोशनी,
उस दिन हर गम हारेगा और
जीतेगी तो बस खुशी।

ब च प न

याद आता है वो सुबह
जब चिड़िया चहकती थी,
कोयल की कूक मीठी लगती थी
पंछियों की कलख से
संगीत गूंजता था ।
याद आते हैं वो कंचे,
वो सात पत्थरों के सितोलिया का झुंड
वो लुका झिपी जिसमें मासूम
बचपन झलकता था ।
याद आती है आइस्क्रीम की घंटी
वे समोसे-कचोरी का दौर,
वो गुड़िया के बाल वो
चना जोर गरम का शोर ।



प्रमिला बाघ
एम.टी.एस



जीवन में अमल करें

जिन घड़ियों में हँस सकते हैं, क्यों तड़पें संताप करें ।
सुख-दुःख तो है आना-जाना, कष्टों में क्यों विलाप करें ।

जीवन के दृष्टिकोणों को, आज नया आयाम मिले ।
सोच सकारात्मक हो तो, मन को पूर्ण विराम मिले ।

हिम्मत कभी न हारो मन की, स्वयं पर अटूट विश्वास रखो ।
मंजिल खुद पहुंचेगी तुम तक, मन में सोच कुछ खास रखो ।

सोच हमारी सही दिशा पर, संकल्पों का संग रथ हो ।
दृढ़ निश्चय कर लक्ष्य को भेदो, चाहे कितना कठिन पथ हो ।

जीवन में ऐसे उछलो कि, आसमान को छेद सको ।

मन की गहराई में डुबो तो, अंतरतम को भेद सको ।
इतना फैलो कायनात में, जैसे सूरज की रोशनाई हो ।
इतने मधुर बनो जीवन में, हर दिल की शहनाई हो ।

जैसी सोच रखोगे मन में, वैसा ही वापस पाओगे ।
पर उपकार को जीवन दोगे, तुम ईश्वर बन जाओगे ।

तुम ऊर्जा के शक्ति पुंज हो, अपनी शक्ति को पहचानो ।
सद्भावों को उत्सर्जित कर, सबको तुम अपना मानो ।

हर छोटा बदलाव बड़ी कामयाबी का हिस्सा होता है ।
इंतजार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता है ।
जितना कि कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं ।



मोहम्मद ज़फर
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

कान्हा के बस में होता तो...

ना जाता मथुरा ना द्वारिका, वृन्दावन में ही रहता,
कभी घूमता गऊओं के संग, कभी वो यमुना संग बहता ।
कभी स्वयं ही की मुरली के तानों में वो खो जाता,
कान्हा के बस में होता, तो बस राधा का हो जाता ।।

उसकी भी तो होगी इच्छा, बंशी और बजाने की,
बैठ कदम्ब के पेड़ पे, सबको अपने पास बुलाने की ।
यमुना में कुछ गेंद फेंक, फिर उन गेंदों की खोज करे,
बाल-सखाओं संग मिलकर गोवर्धन में वन-भोज करे ।
उसका भी तो मन होगा, कि जी भर के माखन खाता,
कान्हा के बस में होता, तो बस राधा का हो जाता ।।

जिसकी तानों ने ब्रज के कण-कण को कभी पुकारा था,
मांग समय की थी, कि उसने चक्र सुदर्शन धारा था ।
महासमर के संभावना की बदली जब छाई होगी,
ब्रज की शीत सुगंधित वायु याद उसे आई होगी ।
शांति ही सर्वोच्च विजय है, रहा सभी को समझाता,
कान्हा के बस में होता, तो बस राधा का हो जाता ।।

द्वंद्व हृदय का तो शाश्वत है, शांति-पर्व हो या रण हो,
संघर्षों का नाम है जीवन, नर हो या नारायण हो ।
बनकर शांति दूत जिसने कुरुओं को शांति संदेश दिया,
बन विराट उसने ही अर्जुन को गीता-उपदेश दिया ।
शांतिदूत रण में अर्जुन के रथ को पथ क्यों दिखलाता,
कान्हा के वश में होता तो बस राधा का हो जाता ।।



योगेश पाण्डेय
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



घर से दूर नौकरी



ओम प्रकाश सिंह
डी.ई.ओ.

घर जाता हूँ तो मेरा ही बैग मुझे चिढ़ाता है,
मेहमान हूँ अब ये पल-पल मुझे बताता है.....
माँ कहती है, सामान बैग में फौरन डालो,
हर बार तुम्हारा कुछ ना कुछ छूट जाता है.....
घर पंहुचने से पहले ही लौटने का टिकट,
वक्त परिंदे सा उड़ता जाता है,
उंगलियों पर लेकर जाता हूँ गिनती के दिन,
फिसलते हुए जाने का दिन पास आ जाता है....
अब कब होगा आना सबका पूँछना,
ये उदास सवाल भीतर तक बिखराता है,
घर से दरवाजे से निकलने तक,
बैग में कुछ न कुछ भरते जाता हूँ
जिस घर की सीढ़ियाँ भी मुझे पहचानती थी,
घर के कमरे की चप्पे-चप्पे में बसता था मैं,
लाइट्स फैन के स्विच भूल डगमगाता है.....
पास पड़ोस जहाँ था बच्चा भी वाकिफ,
बड़े बुजुर्ग बेटा कब आया पूछने चले आते है....
कब तक रहोगे पूछ अनजाने ये वो,
घाव एक और गहरा कर जाते है.....
टेऊन में माँ के हाथों की बनी रोटियाँ,
रोती हुयी आँखों में धुधला जाता है.....
लौटते वक्त वजनी हुआ बैग,
सीट के नीचे पड़ा खुद उदास हो जाता है....
तू एक मेहमान है अब ये पल मुझे बताता है
आज भी मेरा घर मुझे वाकई बहुत याद आता है.....

ये मस्त उम्र फिर नहीं आएगी

जब शनै-शनै उम्र बढ़ जाएगी,
इत्र की जगह आयोडेक्स की खुशबू आएगी ।
कहता हूँ अब भी मिल लिया करो यारों,
ये घड़ियाँ पलटकर नहीं आएगी ।
अभी तो आँखों में नूर है बाकी,
फिर खूबसूरती नजर नहीं आएगी ।
अभी तो यार है, चलते अपने साथ,
फिर केवल छड़ी ही नजर आएगी ।
सुन लो आवाज कभी दोस्तों की,
फिर कानों में मशीन नज़र आएगी ।
हंस लो खिलखिला कर आज,
फिर नकली बतीसी ही झलक आएगी ।
जब दोस्त बुलाए, चले जाओ,
फिर डॉक्टरों से फुर्सत न मिल पाएगी ।
समझ जाओ यारों, समझ जाओ,
ये मस्त उम्र फिर नहीं आएगी ।



मनोज गजभिघे
वरिष्ठ लेखापाल

दोस्त अब थकने लगे हैं

किसी का पेट निकल आया है,
किसी के बाल पकने लगे हैं ।
सब पर भारी जिम्मेदारी है,
सबको छोटी मोटी बीमारी है ।
दिनभर जो भागते दौड़ते थे,
वो अब चलते-चलते भी रुकने लगे हैं ।
पर ये हकीकत है,
अब दोस्त थकने लगे हैं ।
किसी को लोन की फिक्र है,
तो कहीं हेल्थ टेस्ट का जिक्र है ।
फुर्सत की सब को कमी है,
आँखों में अजीब सी नमी है ।
कल जो प्यार के खत लिखते थे,
आज वो व्हाटसप और फेसबुक में लगे हैं ।
पर ये हकीकत है,
अब दोस्त थकने लगे हैं ।

मेरे संघर्षरत्



दोस्त

तू अपनी खूबियाँ ढूँढ
 कमियाँ निकालने के लिए लोग हैं।
 अगर रखना ही है कदम तो आगे रख,
 पीछे खींचने के लिए लोग हैं।
 सपने देखने ही हैं तो ऊंचे देख,
 नीचा दिखाने के लिए लोग हैं।
 अपने अंदर जुनून की चिंगारी भड़का
 जलने के लिए लोग हैं।
 अगर बनानी है तो यादें बना,
 बातें बनाने के लिए लोग हैं।
 प्यार करना है तो खुद से कर,
 दुश्मनी के लिए लोग हैं।
 रहना है तो बच्चा बनकर रह,
 समझदार बनाने के लिए लोग हैं।
 भरोसा रखना है तो खुद पर रख,
 शक करने के लिए लोग हैं।
 तू बस सवार ले खुद को
 आईना दिखाने के लिए लोग हैं।
 खुद की अलग पहचान बना
 भीड़ में चलने के लिए लोग हैं।
 तू कुछ करके दिखा दुनिया को
 बस कुछ करके दिखा,
 तालियाँ बजाने के लिए लोग हैं।
 हर रोज गिर कर भी मुक़मल खड़े हैं
 ऐ जिंदगी देख मेरे हौसले तुझसे भी बड़े हैं।



नीतीश कुमार
डीईओ

नौकरी

बड़ी हसीन होगी तू ऐ नौकरी,
 सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।
 सुख-चैन खोकर, चटाई पर सोकर,
 सारी रात जागकर पन्ने पलटते हैं।
 सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।

अंजान शहर में छोटा सस्ता कमरा लेके,
 किचन बेडरूम सब उसी में सहेज के,
 चाहत में तेरी अपने माँ-बाप और
 दोस्तों से दूर रहते हैं,
 सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।

राशन की गठरी सिर पर उठाये,
 अपनी मायूसी और मजबूरीया खुद ही छुपाये
 खचाखच भरे ट्रेन में सफर करते हैं,
 सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।

इन्टरनेट अखबारों में तुझको तलाशते,
 तेरे लिए पत्र-पत्रिकाये पढ़ते रहते
 बतीस साल तक के जवान कुवारे फिरते हैं,
 तू कितनी हसीन है ऐ नौकरी,
 सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।

साँसें



नमन जैन
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आज दूर नहीं जाके पास की बात करता हूँ..
जीवन देने वाली उस साँस की बात करता हूँ..
जीने के हर एक पल को, जिसे हम यूँ ही जी जाते हैं,,
उस अनोखे एहसास की बात करता हूँ।

रक्त की यात्रा, उससे जुड़ी मात्रा,
होती है नसों में, पर जिंदगी की यात्रा
उसकी आयु की मात्रा बसी हैं साँसों में।

या तो साँसों को साँसें देकर,
जीवन से जीना छीन ले,
या जीवन को लाशें देकर,,
अपनी साँसों को ही छीन ले।

संभालना इन साँसों को आसान है तो मुश्किल भी है,
जैसे तू खुद का दोस्त और खुद का कातिल भी है,
इन साँसों का मजा है ऐसा, तू जीकर ही समझ पाएगा वैसा।

जीवन मिला है उसकी कद्र करना
साँसों की नदी को समुद्र करना,
जीना सिखाएगा तुझे वो खारा भी होके,
प्यार करेगा तुझे बहुतों से हारा भी होके।

सुन क्या कह रही है साँसें तुझसे,
मुझे दिल में रखकर, मेरी आँखों में धूल ना झोकना
डर रही है साँसें तुझसे,
क्योंकि जानता है तू उन्हें रोकना।



प्रमिला बाघ
एम.टी.एस

नींद और मैं

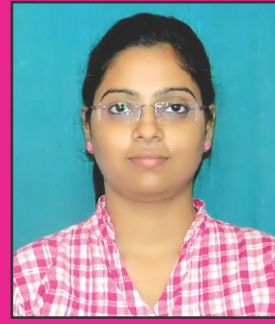
नींद और मैं बहुत पहले साथ रहते थे ।
 वो कहती थी जब मैं आऊंगी तुम सब भूल जाओगे,
 एक करवट यादों की मारोगे तो
 सुबह ही उठ पाओगे ।
 अब मेरी और नींद की एक
 दुश्मनी हो गई है ।
 मैं कहती हूँ तुम आओं
 वो कहती है बिन तेरे जीदंगी
 खुशनुमा हो गई है ।
 बहुत पहले नींद और मैं साथ रहते थे
 मैं और वो करवटें बदल-बदल कर बतियाते थे ।
 वो अपनी सुनाती थी हम अपनी सुनाते थे ।
 वो किस्से मुझे सुई धागे वाली सुनाती थी ।
 हर बीती बात पर एक कहानी बनाती थी
 कहती थी तुम्हारा इससे वास्ता है
 तुम्हार अतीत ही तुम्हारे आगे का रास्ता है ।

हां मुझे याद है बहुत पहले मैं
 और मेरी नींद साथ रहते थे ।
 वह पलको को इशारो से झपकती थी
 और अपने हाथों से सिर को सहलाती थी ।
 तब मुझे दवा नहीं खानी होती थी,
 नींद खुद व खुद आती थी ।
 हां हां मुझे अच्छे से याद है बहुत पहले
 मैं और मेरी नींद साथ रहते थे ।
 पर एक बात में अच्छी थी नींद
 हिसाब किताब में कच्ची थी नींद
 कितने घंटे सोई जोड़ना नहीं पड़ता था
 तब यादों के बावर्ची खाने में
 कोई ख्याल नहीं पकता था ।
 पर न जाने क्यों अब ये नींद
 यकीन ही नहीं करती कि
 मैं और वो बहुत पहले साथ रहते थे ।

क्यों



क्यों आज सब कुछ अलग सा था?
 क्यों आज हवाओं में रुसवाई थी?
 क्यों आज बातों में तर्क नहीं था?
 क्यों आज सांसें गरमाई थी?
 क्यों आज वक्त इतना सिकुड़ रहा था?
 क्यों एक-एक पल शरमाई थी?
 तुमसे मिलने की खुशी तो थी,
 क्यों मैं खुद में अलसाई थी?
 तुम में तो कुछ बदला ना था,
 क्यों मैं फिर इतनी घबराई थी?
 क्यों तुम्हारी बातें याद नहीं कुछ?
 क्यों तुम्हारी आँखें ही नजर आई थी?
 खुले आसमान के नीचे भी,
 क्यों बंदिश जैसी रिहाई थी?
 तुम पहलू में ही तो थे न,
 क्यों मुझमें फिर तनहाई थी?
 तुम जो हो वही तो थे न।
 या मैं किसी और को संग ले आई थी।



अपूर्वा श्री
लेखापाल

पालना और अर्थी

एक पालना था और एक अर्थी थी।
 जहां सूखे काठ में एक जीव निर्जीव मरा था।
 एक झूल रहा था डोरी से,
 दूसरा सारे बंधन तोड़ चला था।
 वह जीव हर पल भाव बदलता था वहीं निर्जीव
 भावहीन निस्तब्ध पड़ा था।
 एक शोर मचा कर सबको पास बुलाता था तो
 दूसरा क्रंदन शोर में भी शांत पड़ा हुआ था।
 लोग भी उस वक्त निश्छल भाव से आते, देखते,
 घरवालों से मिलते और चले जाते।
 समानता दोनों में बस इतनी थी कि उस वक्त दोनों
 ही दुनियादारी से परे थे।
 एक ने तो अभी कुछ सीखा भी नहीं था, दूसरा
 सीख कर छोड़ चुका था।
 एक दुनिया के दस्तूर को
 सीखने के लिए व्याकुल था
 और दुसरे ने सब मोह-माया त्याग दिया था।
 “एक पालना था और एक अर्थी थी।”

नींद है बिखरी हुई..
 उसे समेटने में लगा हूँ..
 उम्मीद भी अब आखरी हुई..
 उसे पास लाने में जगा हूँ..
 वक्त की आंखें भी है भरी हुई..
 उसे काटने में लगा हूँ।
 दर्द सह रही है मेरी आँखें ..
 सपनों को खुशी देने के लिए ..
 कोसों दूर रह रही है आँखें मेरी..
 उन्हें हँसी देने के लिए..
 सुन कुछ कह रही है आँखें मेरी..
 उन्हें जिंदगी प्यारी सी देने के लिए।
 सपनों की चाहत में खुली सी है..
 सुबह से रात तक हर वक्त धुली सी है..
 थोड़ा सा मैला हो जाने तैयार है वो..
 जाने कब से आंसुओं से गीली है वो।
 सपने ही सपनों को मारने लगे है..
 इस कशमकश में हम खुद से हारने में लगे है..
 पर इस हार में भी एक जीत सी दिखती है..
 उस हार को ही हम सँवारने में लगे हैं।
 कभी तेरे इंतजार में ओ नींद..
 कुछ गुस्सा सा आ जाता है..
 तुझे पाने की रहती है उम्मीद..
 पता नहीं दिल कैसा हो जाता है।
 अब लगता है थोड़ा सा हम भी सो लें..
 अब लगता है थोड़ा सा अब सपनों में रो लें..
 ताकी सुबह उठकर झूमते हुए..
 खुद को ही प्यार से चूमते हुए..
 रात भर सोइ उन आंखों को धो लें।
 की अब लगे ऐसा की एक कैद से मेरी नींद है बरी हुई..
 की सारी खुशियां यूँ बाँटने में लगा हूँ..
 नींद है बिखरी हुई..
 उसे समेटने में लगा हूँ।



नमन जैन

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बिखरी हुई नींद



प्रमिला बाघ
एम.टी.एस

अन्तर्मन

जिम्मेदारियों के नीचे,
खुद को जैसे भूल गई हूँ
अपने अपनों की ख्वाहिशों में,
अपनी राह से चूक गई हूँ ।
रेशम की साड़ी में लिपटी, पत्नी
और मां का किरदार निभाया,
पर इन किरदारों में मैंने अपना
अन्तर्मन ही गँवाया ।
चारों तरफ है रिश्तों का जमघट
पर शून्य से जैसे घिरी हूँ
कहीं असफल हो न जाऊँ इस
अहसास से डरी हुई हूँ ।
हर क्षण मन में जमा हुआ है ।
खरा उतर पाऊंगी ये डर,

पर मुझमें जो बना हुआ था,
टूट रहा है उम्मीदों का वो घर ।
क्या अब मैं खत्म हो गई
जीवन दूसरों को देते-देते,
स्वयं ही दब गई हूँ ।
हर जिम्मेदारी लेते-लेते ।
फिर सहसा करवट है बदली
मेरी सोई कलम ने जैसे
नीली स्याही में उकेर दिया है
मन को वैसे का वैसे ।
पंख मिले जब शब्दों के
अन्तर्मन ने भरी उड़ान,
कुछ पल तब कोरे कागज पर,
फिर खिली मेरी मुस्कान ।

पदोन्नत अधिकारी/कर्मचारियों विवरण

दिनांक 01.08.2018 से 31.08.2019 तक

सं.क्र.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	श्री एच. आर. श्रीनिवास	लेखा अधिकारी	28.12.2018
2	श्री संजय कुमार गजभिये	लेखा अधिकारी	28.12.2018
3	श्री जे. सजीत कुमार	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	01.01.2019
4	श्री लुकेश कुमार जंघेल	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
5	श्री विष्णु राम	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
6	श्री मनोज कुमार गजभिये	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
7	श्री कपिल तिवारी	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
8	श्री गजेन्द्र सिंह राजपूत	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
9	श्री योगेश कुमार हिवसे	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
10	श्री कृष्ण कुमार प्रसाद	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
11	श्री राजश कुमार वाडिवा	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
12	श्री रोहिदास उइके	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
13	श्रीमती सुमन सिंह टेकाम	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
14	श्री ओलिवर धीरज कुजूर	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
15	श्री विकास किसपोट्टा	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
16	श्री सेबेस्टियन एक्का	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
17	श्री पेथियास गोंडाने	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
18	श्री सुदेश कुमार सोनी	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
19	श्री ब्रजश कुमार पाण्डेय	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
20	श्री भरत गजभिये	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
21	श्री मेघनाथ रावटे	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
22	श्री रामचरण निर्णेजक	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
23	श्री सम्पत लाल मरावी	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
24	श्री झनक लाल उइके	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
25	श्रीमती सोनी कुमारी	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
26	श्रीमती संजुक्ता बासु	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
27	श्री राजेश कुमार सिंह	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
28	श्री संजय महतो	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
29	श्री आकाश कुर्रे	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
30	श्री विश्वेन्द्र सिंह	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
31	श्री सुमीत सुरेश राव रुइकर	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
32	श्री अवनिश सिंह धालीवाल	वरिष्ठ लेखापाल	01.01.2019
33	श्री रविशंकर कुमार	डी.ई.ओ. ग्रेड-बी	01.01.2019
34	श्री संजीव कुमार	डी.ई.ओ. ग्रेड-बी	01.01.2019
35	श्री सुनील कुमार पटेल	लेखापाल	01.01.2019

सेवानिवृत्त अधिकारी/कर्मचारियों विवरण

सं.क्र.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	श्री एस. के. एम. खापर्डे	वरिष्ठ लेखापाल	31.10.2018
2	श्री जे. एल. तिरहुति	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.11.2018
3	श्रीमती स्निग्धा मुखर्जी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.11.2018
4	श्रीमती बेरथा मिंज	वरिष्ठ लेखापाल	31.12.2018
5	श्री व्ही. आर. मेश्राम	वरिष्ठ लेखापाल	31.01.2019
6	श्री एफ. के. चिंचखेड़े	वरिष्ठ लेखापाल	31.01.2019
7	श्री शिवकुमार सिंह तंवर	वरिष्ठ लेखापाल	31.08.2019

सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी से लेखा परीक्षा अधिकारी

सं.क्र.	नाम (सर्वश्री)	यूनिक आईडी	पदग्रहण दिनांक
1	विशाल शुक्ला	सी.जी.आर.पी.ए .3250030	22.10.2018 (पूर्वा)
2	विजय केशवानी	सी.जी.आर.पी.ए .3250033	22.10.2018 (पूर्वा)
3	मनीष कुमार मिश्रा	सी.जी.आर.पी.ए .3250035	22.10.2018 (पूर्वा)
4	अनमोल आदर्श बाकरे	सी.जी.आर.पी.ए .3250036	22.10.2018 (पूर्वा)
5	गौतम कुमार	सी.जी.आर.पी.ए .3250046	22.10.2018 (पूर्वा)
6	ओमप्रकाश देवांगन	सी.जी.आर.पी.ए .3250038	22.10.2018 (पूर्वा)
7	निशांत कुमार यादवेश	सी.जी.आर.पी.ए .3250049	22.10.2018 (पूर्वा)
8	नीलिमा मेहर	सी.जी.आर.पी.ए .3250041	22.10.2018 (पूर्वा)
9	साजन थॉमस	सी.जी.आर.पी.ए .3250081	22.10.2018 (पूर्वा)
10	बिभूति भूषण मिश्रा	सी.जी.आर.पी.ए .3250080	22.10.2018 (पूर्वा)
11	शीना वी. पिल्लई	सी.जी.आर.पी.ए .3250083	22.10.2018 (पूर्वा)
12	प्रीति शर्मा	सी.जी.आर.पी.ए .3250086	22.10.2018 (पूर्वा)
13	एम.वी. अनंत साईराम	सी.जी.आर.पी.ए .3250104	22.10.2018 (पूर्वा)
14	कृष्णराम वर्मा	सी.जी.आर.पी.ए .2111035	22.10.2018 (पूर्वा)
15	रविन्द्र कुमार बिसवाल	सी.जी.आर.पी.ए .2250161	22.10.2018 (पूर्वा)
16	प्रबोध कुमार श्रीवास्तव	सी.जी.आर.पी.ए .2250168	22.10.2018 (पूर्वा)
17	गोपीनाथ पाणिग्रही	सी.जी.आर.पी.ए .2250184	22.10.2018 (पूर्वा)
18	कविता विनय	सी.जी.आर.पी.ए .2250221	22.10.2018 (पूर्वा)
19	लेखा उदयन	सी.जी.आर.पी.ए .2250232	22.10.2018 (पूर्वा)
20	मोहम्मद साबिर अली	सी.जी.आर.पी.ए .2250233	22.10.2018 (पूर्वा)
21	राजेश कुमार सिंह	सी.जी.आर.पी.ए .2250243	22.10.2018 (पूर्वा)
22	चन्द्रकान्त वर्मा	सी.जी.आर.पी.ए .2250281	22.10.2018 (पूर्वा)
23	हरिकेश वर्मा	सी.जी.आर.पी.ए .3250026	22.10.2018 (पूर्वा)
24	पंकज द्विवेदी	सी.जी.आर.पी.ए .3250028	22.10.2018 (पूर्वा)
25	गौरव त्रिपाठी	सी.जी.आर.पी.ए .3250032	22.10.2018 (पूर्वा)

26	शक्तिश्वर राम मिश्रा	सी.जी.आर.पी.ए .3250113	22.10.2018 (पूर्वा)
27	हितेश कुमार गौतम	सी.जी.आर.पी.ए .3250118	22.10.2018 (पूर्वा)
28	एम.वी. भास्कर राव	सी.जी.आर.पी.ए .3250063	22.10.2018 (पूर्वा)
29	विवेक ईशान मेश्राम	सी.जी.आर.पी.ए .3250089	22.10.2018 (पूर्वा)
30	अजय टोप्पो	सी.जी.आर.पी.ए .3250100	22.10.2018 (पूर्वा)
31	सुमन कुमार	सी.जी.आर.पी.ए .3191140	22.10.2018 (पूर्वा)
32	प्रवीण कुमार तिकी	सी.जी.आर.पी.ए .3250119	23.10.2018 (पूर्वा)
33	गजेन्द्र डोंगरवार	सी.जी.आर.पी.ए .2250203	22.10.2018 (पूर्वा)
34	श्रीमती मिनी एस. मेनन	सी.जी.आर.पी.ए .2250223	22.10.2018 (पूर्वा)
35	गीतेश कुमार	सी.जी.आर.पी.ए .2250235	22.10.2018 (पूर्वा)
36	नारायण गुप्ता वाराणसी	सी.जी.आर.पी.ए .2250247	22.10.2018 (पूर्वा)
37	मनीष कुमार शुक्ला	सी.जी.आर.पी.ए .2250268	22.10.2018 (पूर्वा)
38	भवानीकांत पुरोहित	सी.जी.आर.पी.ए .2250270	22.10.2018 (पूर्वा)
39	वीरेन्द्र पटेल	सी.जी.आर.पी.ए .3250040	22.10.2018 (पूर्वा)
40	अनुराग वर्मा	सी.जी.आर.पी.ए .3250115	22.10.2018 (पूर्वा)
41	त्रिपुरारी सिन्हा	सी.जी.आर.पी.ए .3250121	23.10.2018 (पूर्वा)
42	दिव्या साहू	सी.जी.आर.पी.ए .3250117	22.10.2018 (पूर्वा)
43	अनुपम कुमार वर्मा	सी.जी.आर.पी.ए .3310307	22.10.2018 (पूर्वा)
44	वीरेन्द्र कुमार महतो	सी.जी.आर.पी.ए .3120808	22.10.2018 (पूर्वा)
45	मनोज कुमार	सी.जी.आर.पी.ए .3120853	22.10.2018 (पूर्वा)
46	सुरेश कुमार	सी.जी.आर.पी.ए .2250249	22.10.2018 (पूर्वा)
47	सुरेश महादेव निकोसे	सी.जी.आर.पी.ए .3250074	22.10.2018 (पूर्वा)
48	ई. राजशेखर राव	सी.जी.आर.पी.ए .3250082	22.10.2018 (पूर्वा)

वरिष्ठ लेखा परीक्षक /लेखा परीक्षक/डी.ई.ओ. से सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

सं.क्र.	नाम	यूनिक आईडी	पदग्रहण दिनांक
1	श्री देवीसिंह मीणा	सी.जी.आर.पी.ए .3250295	22/10/18 (पूर्वा.)
2	प्रशांत कुमार	सी.जी.आर.पी.ए .3250213	22/04/19 (पूर्वा.)
3	सुश्री रोमा रश्मि मिश्रा	सी.जी.आर.पी.ए .3250273	24/04/19 (पूर्वा.)
4	विवेक पाराशर	सी.जी.आर.पी.ए .3250267	24/04/19 (पूर्वा.)
5	अमित कुमार चौबे	सी.जी.आर.पी.ए .3250270	22/04/19 (पूर्वा.)
6	रवि कुमार मण्डल	सी.जी.आर.पी.ए .3250279	22/04/19 (पूर्वा.)
7	कृष्ण कल्याण प्रसाद	सी.जी.आर.पी.ए .3250154	22/04/19 (पूर्वा.)
8	पंकज कुमार	सी.जी.आर.पी.ए .3250319	24/04/19 (अप.)

सेवानिवृत्त अधिकारी/कर्मचारियों विवरण

सं.क्र.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	श्री नितिन कुमार पाल	पर्यवेक्षक	31.01.2019
2	श्री पी. सी. मण्डल	वरिष्ठ लेखा परीक्षक	15.05.2019
3	श्री उत्तम मंडपे	पर्यवेक्षक	31.05.2019
4	श्री गौरी विश्वास	वरिष्ठ लेखा परीक्षक	31.08.2019

वरिष्ठ लेखा परीक्षक से पर्यवेक्षक

सं.क्र.	नाम (सर्वश्री)	यूनिक आईडी	पदग्रहण दिनांक
1	श्रीमती शाइनी जे. मण्डल	सी.जी.आर.पी.ए .3250084	15/03/19 (पूर्वा.)
2	श्रीमती संगीता साटकर	सी.जी.आर.पी.ए .3250090	03/06/19 (पूर्वा.)

लेखा परीक्षक से वरिष्ठ लेखा परीक्षक

सं.क्र.	नाम	यूनिक आईडी	पदग्रहण दिनांक
1	राजेश कुमार वर्मा	सी.जी.आर.पी.ए .3250166	01/01/19 (पूर्वा.)
2	जितेन्द्र कुमार यादव	सी.जी.आर.पी.ए .3250156	01/01/19 (पूर्वा.)
3	रेवाराम साहू	सी.जी.आर.पी.ए .3250181	01/01/19 (पूर्वा.)
4	मोहम्मद असलम खान	सी.जी.आर.पी.ए .3250157	01/01/19 (पूर्वा.)
5	मोहम्मद जाफर	सी.जी.आर.पी.ए .3250194	01/01/19 (पूर्वा.)
6	रोशन तिग्गा	सी.जी.आर.पी.ए .3250199	01/01/19 (पूर्वा.)
7	रोहित आनन्द	सी.जी.आर.पी.ए .3060759	01/01/19 (पूर्वा.)
8	योगेश पाण्डेय	सी.जी.आर.पी.ए .3250336	01/01/19 (पूर्वा.)
9	दीपक कुमार शुक्ला	सी.जी.आर.पी.ए .3250329	01/01/19 (पूर्वा.)
10	अरूण कुमार	सी.जी.आर.पी.ए .3250328	01/01/19 (पूर्वा.)
11	सुनील कुमार गुप्ता	सी.जी.आर.पी.ए .3250330	01/01/19 (पूर्वा.)
12	सुमित कुमार गुप्ता	सी.जी.आर.पी.ए .3250340	01/01/19 (पूर्वा.)
13	आदित्य कुमार	सी.जी.आर.पी.ए .3250331	01/01/19 (पूर्वा.)
14	कन्हैया कुमार सिंह	सी.जी.आर.पी.ए .3250337	01/01/19 (पूर्वा.)
15	रिषभ तिवारी	सी.जी.आर.पी.ए .3250325	01/01/19 (पूर्वा.)
16	आशुतोष सिंह	सी.जी.आर.पी.ए .3250326	01/01/19 (पूर्वा.)

एमटीएस से लेखा परीक्षक

सं.क्र.	नाम (सर्वश्री)	यूनिक आईडी	पदग्रहण दिनांक
1	राजेश कुमार	सी.जी.आर.पी.ए .3250202	01/01/19 (पूर्वा.)
2	मंगल सिंह बिरुआ	सी.जी.आर.पी.ए .3250325	01/01/19 (पूर्वा.)
3	अनीता ठाकुर	सी.जी.आर.पी.ए .3250141	01/01/19 (पूर्वा.)
4	हरी राम	सी.जी.आर.पी.ए .3250169	01/01/19 (पूर्वा.)
5	सुधीर कुमार माझी	सी.जी.आर.पी.ए .3250190	01/01/19 (पूर्वा.)

डी.ई.ओ. ग्रेड 'ए' से ग्रेड 'बी'

सं.क्र.	नाम (सर्वश्री)	यूनिक आईडी	पदग्रहण दिनांक
1	अर्जुन कुमार	सी.जी.आर.पी.ए .3250253	19/03/19 (पूर्वा.)